मम य दिसउ संजमे नंदिं

हे प्रभु ! मुझे लोग कहते हैं कि संयम मार्ग बहुत कष्टमय है। परंतु में स्पष्ट रुप से मानता हूँ कि संयम मार्ग अत्यन्त आनंदमय है। जैसे तिल के अणु अणु में तेल रहता है। फल के कण कण में रस रहता है। उसी तरह से संयम के क्षण क्षण में ठूँस ठूँस कर आनंद भरा हुआ है। उस आनंद रस को मैं प्राप्त कर सकूँ ऐसा मुझे दिल देना कि जो मेरे संयम जीवन के लिए आनंद का फुहारा बना रहे।

संसार में दुःख मिल रहा है इसलिये मुझे संसार नहीं छोड़ना है। बल्कि भोग और भोजन की प्रत्येक क्षणों में दूसरे जीवों को दुःखी किये बिना संसार में हम लोग जी नहीं सकते। इसलिये मुझे अब संसार छोड़ देना है।

Please,

मुझे दीक्षा दे दो

॥ धर्मो रक्षति रक्षितः ॥
श्री महावीराय नमः
नमोऽस्तु तस्मै जिनशासनाय ।

॥ श्री दान-प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-राजेन्द्र-चन्द्रशेखर-विमलकीर्ति
सद्गुरुभ्यो नमः ॥

Please,
मुझे दीक्षा दे दो...

संयम स्वीकार करने के लिए
अत्युत्साही मुमुक्षुओं के विषय में लोकमानस में
उत्पन्न होने वाले कुछ प्रश्नों के समाधान

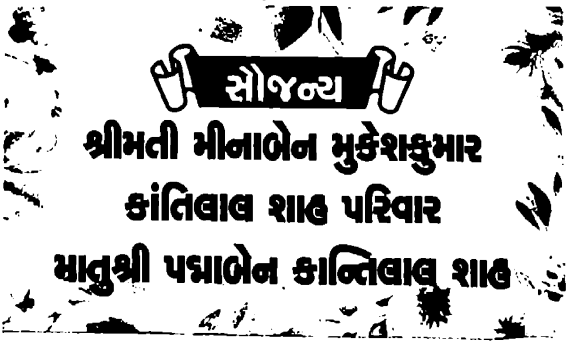

•

प्रकाशक : प्राप्तिस्थान

कमल प्रकाशन ट्रस्ट

६-ए, चंदनबाला कोम्पलेक्ष, आनंदनगर पोस्ट ओफिस के पास,

भट्ठा-पालडी, अहमदाबाद-३८० ००७.

फोन : ०७९-२६६४१५५८, २६६०५३५५

जसवंतभाई मो.: ९९०९५५४६४२

•

प्रथम आवृत्ति : १०००

मूल्य : २५-००

•

प्रकाशन वर्ष :

विक्रम संवत २०७६

श्रावण सुद-दशम

ता. २९-०७-२०२०

•

टाईपसेटिंग

अरिहंत ग्राफिक्स

खाडिया चार रस्ता, अहमदाबाद-३८०००१.

पुस्तक पढने से पहले....

आगमसूत्र श्री पन्नवणाजी में कहा गया है कि,

मध्यस्थो बुद्धिमानर्थी श्रोता पात्रमिति स्मृतः ।

१-जो मध्यस्थ है २-जो बुद्धिशाली है ३-जो सुनने-समझने-स्वीकार करने और भूल सुधारने की इच्छा रखता है वही व्यक्ति किसी भी बात को सुनने का अधिकारी है । जिसमें यह गुण नही होता वह सुनने का अधिकारी नहीं है । अर्थात् ऐसे अनधिकारी व्यक्ति को कुछ भी न कहें ऐसा शास्त्रकार भगवंतो का उपदेश है ।

इस पुस्तक में संयम के संबन्ध में पूँछे जाने वाले कुछ प्रश्न हैं । बहुत से व्यक्तियों का ऐसा अनुभव है कि जब कोई व्यक्ति दीक्षा लेने की भावना व्यक्त करता है तब उस व्यक्ति को बहुत से प्रश्नों का जवाब देना पड़ता है । उन प्रश्नों को पूँछने वाले जिज्ञासु आत्माओं को कुछ अंश तक समाधान मिले ऐसी सद्भावना से इसमे उन प्रश्नों के विषय में प्रकाश किया गया है । उपरोक्त कथनानुसार गुण संपन्न आत्मायें इस पुस्तक को आधार मानकर सम्यग्ज्ञान को प्राप्त करें और ज्ञान का फल अर्थात् विरतिधर्म को भी प्राप्त करें ऐसी एक अभिलाषा ।

इस पुस्तक में बतायी गई बातों को खुले मन से एकाग्रता पूर्वक समझने का प्रयास करेंगे । क्योंकि **Mind is like a Parachute. It works only when it is open.**

— आ. हंसकीर्तिसूरि

यहां पर दिये हुये सभी प्रश्नों को मुमुक्षु के माता-पिता पू. गुरुभगवंतो से जिज्ञासापूर्वक पूँछ रहे हैं और गुरुभगवंत उन सभी प्रश्नों का समाधान करा रहे हैं इस पद्धति से आप पुस्तक को पढना ।

Please, मुझे दीक्षा दे दो...

प्रश्न [illegible] 1 : साहेबजी ! मैंने अपने पुत्र को ९-९ महिने पेट में रखा । उसकी सब प्रकार से देखभाल की । पढ़ा लिखा कर बड़ा किया । यह सब मैंने इसलिए थोड़े ही किया हैं कि यह हम लोगों को छोड़ कर दीक्षा ले ले । माँ-बाप की सेवा करने की इसकी भी फर्ज बनती हैं कि नहीं ।

उत्तर : लोग माँ-बाप की सेवा की बात करके संयम स्वीकार के मार्ग में बाधा उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं परंतु संयम न लेने वाले कितने बच्चे माँ-बाप की सेवा करते हैं ? इसकी बात कोई नहीं करता ।

- पुत्र ही न हो तो वहाँ सेवा का प्रश्न पैदा नहीं होता ।
- पुत्र साथ में न हो तो वहाँ भी सेवा का प्रश्न पैदा नहीं होता ।
- पुत्र यदि प्रतिकूल जीवन जीता हैं तो वहाँ सेवा का प्रश्न पैदा नहीं होता ।
- पुत्र यदि पथारीवश हो जाय तो खुद माँ-बाप को ही उसकी सेवा करनी पड़ती हैं । वहाँ भी यह प्रश्न उपस्थित नहीं होता ।
- पुत्र यदि विदेश में ही सेट हो जाय तो वहाँ भी यह प्रश्न पैदा नहीं होता ।
- पुत्र Mostly out of station हो तो वहाँ पर भी यह प्रश्न पैदा नहीं होता ।
- पुत्र यदि माँ-बाप से पहले ही परलोकवासी हो जाय तो वहाँ भी यह प्रश्न पैदा नहीं होता ।
- यदि पुत्र साथ में ही रहता हो तो भी बहु के अपमान से

माँ-बाप खुब दुःखी हो गये हों तो वहाँ भी यह प्रश्न पैदा नहीं होता ।

- पुत्र के व्यंग्य बाणों से माँ-बापका हृदय छेद जाय तो वहाँ भी यह प्रश्न पैदा नहीं होता ।
- पौत्र, पौत्रियों के द्वारा भी जो ये अपमानित किए जाते हों तो वहाँ भी यह प्रश्न पैदा नहीं होता ।

परंतु यदि कोई पुत्र दीक्षा लेने की बात करता हैं तो वहाँ पर ही इस प्रश्न को उसके सिर पर मारा जाता हैं ।

यहाँ पर एक सर्वे करने जैसा हैं कि –

"कितने माँ-बाप को ऐसा विश्वास हैं ? कि मेरा पुत्र वृद्धावस्था में हमारी भलीभाँति सभी प्रकार से सेवा करेगा । हमें हर तरह से प्रसन्न रखेगा ।"

इस प्रश्न का ९०-९५% माँ-बाप के द्वारा ऐसा जवाब मिलता हैं कि हमने तो हमारी सेवा की आशा ही छोड़ दी हैं । इतने वर्ष बीत गये तो अंत में वृद्धावस्था के वर्षो को भी हम हमारी तरह से पूरा कर देंगे । परंतु वह अपने परिवार (पत्नी-पुत्र) के साथ भी मिलजुल कर रहेगा कि नहीं ? यह बहुत बड़ी चिंता का विषय हैं ।

जब वास्तविक्ता यह हैं तो फिर किसलिए पुत्र के पास सेवा की बात करके उसके संयम के मार्ग में अंतराय पैदा करते हो ?

क्या आपका सुपुत्र भी दूसरे बालकों की तरह झगडालू नहीं निकला यह उसकी गलती ?

- वह व्यसनी नही निकला यह उसकी गलती ?
- वह व्यभिचारी नहीं निकला यह उसकी गलती ?
- वह उद्धत नहीं निकला यह उसकी गलती ?
- वह पागल नहीं यह उसकी गलती ?
- वह अपंग नहीं हैं यह उसकी गलती ?

उसने ऐसी कौन सी गलती की हैं जिसके कारण आप उसके

आत्मकल्याण के मार्ग में बाधक बन रहे हो । अपने स्वार्थ के लिए एक कुतिया अपने बच्चे को खा सकती हैं लेकिन जिनशासन की श्राविका कभी नहीं ।

आगम सूत्र श्री भक्तपरीज्ञा में तो यहाँ तक कहा गया हैं कि –

सव्वे वि य संबंधा पत्ता जीवेण सव्वजीवेहिं ।
तो मारंतो जीवे मारइ संबंधिणो सव्वे ॥

(सूत्र-१२)

आत्मन् !

समग्र सृष्टि में सभी जीवों के साथ आपने माता-पिता-भाई-बहन आदि अनेको रुपों में संबंध बना लिया हैं । तो उन सभी जीवों को मारने के द्वारा तुम स्वयं ही तुम्हारे माता-पिता आदि को मार रहे हो ।

इसलिए यदि माता-पिता के लिए जिसके हृदय में भक्तिभाव हो उसे तो शीघ्रातिशीघ्र दीक्षा ही ले लेनी चाहिए ।

- संसार में रह करके रोज सुबह आप जिस पानी से स्नान करते हो उस अप्काय के जीवों में पूर्वभवों के असंख्य माता-पिता होते हैं जो अपने ही पुत्र के (पूर्वभव के संबंधो से) हाथों मौत के घाट उतार दिये जाते हैं ।
- जब गेस चालू की जाती हैं तब उसमें भी असंख्य माता-पिता दुःखी होते हैं और मृत्यु को प्राप्त होते हैं ।
- शाक सुधारना हो या बघारना हो तब भी माता-पिता की कत्ल चालू ही रहती हैं ।
- घर में आप कुछ भी आरंभ समारंभ करने जाओ एक-दो से लेकर असंख्य अनंत माता-पिता मृत्यु को प्राप्त होते ही रहते हैं ।
- असंख्य अनंत भाई-बहनों पर जुल्म होता ही रहता हैं ।
- असंख्य अनंत पति-पत्नि हेरान परेशान होते ही रहते हैं ।
- असंख्य अनंत पुत्र-पुत्रियों की अपने ही हाथ से हत्या करते ही रहते हैं ।

माँ-बाप की सेवा के नाम पर पुत्र को घर में रखकर दीक्षा न दिलाने वाले माँ-बाप को पता भी नहीं होता कि यह आपका पुत्र संसार में आज अपने असंख्य अनंत माता-पिता की कत्ल कर रहा हैं।

वास्तविकता तो यह हैं कि

संयम स्वीकारने वाले पुत्र के हृदय में माँ-बाप के प्रति अत्यधिक वात्सल्य हैं। और संयम को इन्कारने वाले व्यक्ति के हृदय में माँ-बाप के प्रति अतिशय क्रूरता हैं। और वह भी मात्र एक ही माँ-बाप के प्रति नहीं परंतु असंख्य अनंत माँ-बाप के प्रति।

इसी बात को षोडशक प्रकरण में कहा गया हैं कि -

तद्वद्धिता च जननीति - हितस्विनी मा।

- *जो माँ अपने संतान के हित की इच्छा करें।*
- *जो माँ अपने संतान के हित के लिए प्रयत्न करें।*
- *जो माँ अपने संतान के हित को देख करके प्रसन्न हो।*
- *जो माँ अपने संतान के हित के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तैयार रहे वही सच्ची माँ।*

- सच्ची माँ को संतान C.A. बनें और लोगों का चोपड़ा शुद्ध करे इसमें रस नहि होता बल्कि पुत्र कर्म के चोपड़े को शुद्ध करे इसमें रस होता हैं।
- सच्ची माँ को संतान M.D., M.S. बने और Operation के द्वारा शरीर की गाँठो को दूर करे उसमें रस न हो बल्कि पुत्र आत्मा पर लगे हुए कर्मों की दुर्जय गांठो को साधना द्वारा दूर करे इसमें रस हो।
- सच्ची माँ को संतान गणित में expert बने इसमें रस न हो बल्कि पुत्र कर्मराज के गणित को समझ लें इसमें रस हो।
- सच्ची माँ को संतान प्रतिदिन १०-१२ घंटे School - College की पुस्तकों को पढ़े उसमें रस न हो बल्कि भगवान महावीर के ४५ आगमो को पढ़े इसमें रस हो।

- सच्ची माँ को संतान Body-Builder बन जाय इसमें रस न हो बल्कि पुत्र क्षमा, नम्रता, सरलता आदि आत्मगुणों से हृष्ट-पुष्ट बने इसमें रस हो ।
- सच्ची माँ को संतान पानी में तैरना सीख जाय उसमें रस न हो बल्कि संसार सागर को तैरना सीख जाय उसमें रस हो ।
- सच्ची माँ को संतान कराटे चैम्पियन बन जाय उसमें रस न हो बल्कि पुत्र कर्म के साथ युद्ध में निर्भय योद्धा बन जाय इसमें रस हो ।
- सच्ची माँ इन सभी कार्यों में अपने स्वार्थ को बीच में कभी भी नहीं लाती हैं ।

एक माँ के दो बेटे थे । माँ ने एक बेटे को दीक्षा दिला दी और दूसरे को घर पर ही रखा । कुछ समय के बाद एक दिन घर पर रहने वाले बेटे की भयानक Accident में घटनास्थल पर ही मृत्यु हो जाती हैं । On the Spot खेल खत्म । पुत्र की Dead Body पर सर रख कर माँ विलाप कर रही हैं करुण कल्पांत कर रही हैं । तभी कुछ आत्मीय(!) लोगों ने उनसे कहा कि देखो यदि एक बेटे को आपने दीक्षा न दिलायी होती तो आज वह आपके काम आता । इस बात को सुनकर उस बहन ने अपने आँसुओं को तुरंत पोंछ लिया और गंभीर स्वर में कहा 'ना, मैं इसलिए नहीं रो रही हूँ बल्कि इसलिए रो रही हूँ कि यदि मैंने अपने इस दूसरे बेटे को भी दीक्षा दिला दी होती तो इसकी आत्मा का कल्याण तो हो जाता । वैसे भी यह मेरे पास कहाँ रह सका ?'

यदि माँ बनो तो ऐसी माँ बनो जो पुत्र के हित की कामना करें ।

• याद करो उस रुद्रसोमा श्राविका को, जिसने अपने पुत्र आर्यरक्षित को कहा कि 'हे पुत्र ! तुमने भले ही १४ विद्याओंमें निपुणता प्राप्त की उसका मुझे आनंद नहीं हैं । परंतु यदि जो तु १४ पूर्व का अभ्यास करे तो मुझे प्रसन्नता होगी ।' और इस कुलदीपक

को मामा म.साहब तोसलिपुत्राचार्य के पास दीक्षा दिलायी । और वही बेटा युगप्रधान आचार्य श्री आर्यरक्षितसूरि बना ।

• याद करो उस पाहिणी माता को, जिसने अपने चाँगा को जिनशासन के चरणों में समर्पित कर दिया । जो बाद में कलिकालसर्वज्ञ आचार्य श्री हेमचन्द्रसूरिजी बने ।

• याद करो उस देवकी माता को, जिसने अपने गजसुकुमाल को कह दिया था कि बेटा ! तु अपने भवचक्र की आखिरी माता बनने का सौभाग्य मुझे प्रदान करना । मेरे बाद फिर तुम दूसरी माँ मत बनाना । और गजसुकुमाल ने सिद्धिगति को प्राप्त कर लिया ।

• याद करो उस अरणिक की माता को, पुत्र जब संयम भ्रष्ट हुआ तब माँ पागल बन गयी । पुत्र को फिर से दीक्षा दिलायी । पुत्र का शरीर कठोर काल समान धगधगती शिला पर मोम की तरह पिघल गया फिर भी उस माता की आँखो में संतोष के आँसू थे । क्योंकि पुत्र ने आत्मकल्याण सिद्ध कर लिया हैं ।

• याद करो उस सोभागदे श्राविका को, जिसने अपने दोनों बेटों पद्मसिंह और जशवंत को दीक्षा दिलाइ थी । उस माँ ने गुरु म.साहेब से कहा था कि 'साहेबजी ! ये मेरे दोनों बेटे रत्न हैं । जो घर में रहेंगे तो मात्र घर आलोकित करेंगे परंतु यदि शासन के चरणों में जायेंगे तो संपूर्ण जिनशासन को प्रकाशित करेंगे ।'

इन सुपुत्रो ने वास्तव में जिनशासन को प्रकाशित किया और आज भी इनके द्वारा सर्जित ग्रंथ इस बात की गवाही दे रहे हैं ।

ऐसा देदीप्यमान मात्र इतिहास ही हैं ऐसा नहीं हैं । अपितु वर्तमान समय में भी जिनशासन को समझने वाली ऐसी अनेक मातायें हैं कि जिन्होंने अपने दोनों पुत्रों को अथवा अपनी अकेली एक ही संतान को अथवा पति सहित पुत्रों को संयम मार्ग में विचरने की सहर्ष उत्साह पूर्वक अनुमति प्रदान की हैं ।

प्रत्येक माता-पिता इस तरह से अपने स्वार्थ को दफनाकरके अपनी शरण में आये हुये अपनी संतानो के आत्महित के मार्ग में कहीं

भी अवरोधक न बने यही उनका सर्वोत्कृष्ट कर्तव्य हैं ।

जिस माता-पिता ने अपने प्राणप्रिय पुत्रों को संयम पथ पर अग्रसर कर दिया हैं उन्हें जीवन पर्यंत अपूर्व संतोष, पूर्ण प्रसन्नता, समाज में गौरवान्वित स्थान, श्री संघ में सम्मान और आजीवन पुत्र महाराज के आराधना की खूब,खूब अनुमोदना, और उसके द्वारा हमेशा होने वाली उत्कृष्ट कर्मनिर्जरा, और उसके द्वारा निश्चित सद्गति की परंपरा, और इसके द्वारा संसार सागर से अपना शीघ्र निस्तार और अंत में शाश्वत सुख की प्राप्ति होती हैं ।

अतः आप भी इस स्थान को प्राप्त करे ऐसी शुभभावना ।

पर से परम् तक
स्व से सोहम् तक
अहं से अर्हम् तक
शुद्धि से सिद्धि तक की यात्रा
यानि
संयमयात्रा

प्रश्न-२० महाराज साहेब ! मैंने सुना हैं कि अपने भगवान महावीर स्वामी जब त्रिशला माता के गर्भ में थे तभी उन्होंने अभिग्रह लिया था कि मेरे माता-पिता जब तक जीवित रहेंगे तब तक मैं दीक्षा नहीं लूँगा । जब भगवान स्वयं माता-पिता की सेवा को इतना अधिक महत्त्व देते हों तो फिर मेरे लड़के को भी क्या नहीं समझना चाहिए ? मैं कहाँ उसे दीक्षा लेने से मना कर रहा हूँ । हमारे परलोक गमन के बाद इसको दीक्षा लेनी हो तो खुशी से ले ।

उत्तर : आपने जो सुना हैं वह बात गलत नहीं हैं फिर भी पूर्णत: सत्य भी नहीं हैं । देखो, हमारे भगवान मात्र महावीर स्वामी अकेले ही नहीं हैं बल्कि हमारे भगवान तो चौबीस हैं ।

ध्यान से देखो, शत्रुंजय तीर्थाधिपति प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान के चरित्र को, मरुदेवा माता भगवान ऋषभदेव के दीक्षा लेने कारण जिस तरह से करुण कल्पांत करती हैं आक्रंद करती हैं । उसका वर्णन करते हुये कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्रसूरीश्वरजी म.साहेब बताते हैं कि –

तनुजविरहोद्भूतैरश्रान्तैरस्त्रवारिभि:
जातनीलिकया लुप्तलोचनाब्जां पितामहीम् ॥

(त्रिषष्टि-प्रथमपर्व-तृतीयसर्ग)

पुत्र विरह से शोक संतप्त मरुदेवा माता लगातार रोये जा रही हैं और इस तरह से रोते रोते एक हजार वर्ष व्यतीत हो गये । जिसके कारण आँखें बंद हो गयीं और दिखायी पड़ना भी बंद हो गया ।

आगे देखो,

गिरनार मण्डन, बालब्रह्मचारी श्री नेमिनाथ भगवान के

चरित्र को –

बारात लेकर जा रहे हैं राजीमती के साथ विवाह करने के लिए । आधे रस्ते से ही रथ को लौटा लेते हैं । शिवादेवी माता और समुद्रविजय पिता पूँछते हैं कि तुम विवाह किये बिना वापस क्यों जा रहे हों ? तब नेमिकुमारजी जवाब देते हुये कहते हैं कि "जिस तरह से इन पशुओं को बंधन से मुक्त किया गया हैं उसी तरह से मैं भी मेरी आत्मा को कर्मबंधन से मुक्त करने के लिए दीक्षा ग्रहण करूँगा ।" उस समय माता-पिता, कृष्ण-बलराम और सभी यादवों की जो दशा हुयी थी उसका वर्णन नेमिनाथ चरित्र में किया गया हैं ।

तन्नेमिवचो निशम्य तौ द्वावपि शिवादेवीसमुद्रविजयौ मुमूर्च्छतुः ।

नेमिकुमार के वचन को सुनते ही शिवादेवी और समुद्रविजय राजा के सिर पर मानो आकाश टूट पड़ा हो ।

माता-पिता दोनों वहीं पर बेहोश होकर गिर पड़ते हैं ।

राम-केशवादयोऽन्येऽपि नेमेः प्रव्रज्यानिश्चयं ज्ञात्वा उच्चैः स्वरं रुरुदुः ।

बलराम और कृष्ण वासुदेव भी जोर जोर से करुण कल्पांत कर रहे हैं ।

सर्वे यदवश्च अश्रुपूर्णदृशो रुरुदुः ।

सभी यादवों की आँखे आँसुओ से भरी हुयी हैं ।

नेमिकुञ्जरस्तु स्वजनस्नेहनिगडान् त्रोटयन् सारथिप्रेरितस्यन्दनः स्वगृहमगात् ।

इतना सब होते हुये भी नेमिकुमार स्वजनों की स्नेह रुपी जंजीर को तोड़ करके अपना रथ वापस लौटा लेते हैं ।

इस प्रकार श्री ऋषभदेव भगवान और श्री नेमिनाथ भगवान के दृष्टांत को लिया जाय तो जब तक माता-पिता जीवित रहे तब तक दीक्षा नहीं लेनी चाहिये यह बात ही पैदा नहीं होती ।

फिर भी शासनपति श्री महावीर स्वामी भगवान के दृष्टांत को आगे करके यदि यह बात कही जाती हैं तो भी योग्य नहीं हैं । क्यों कि भगवान महावीर स्वामी पहले से ही तीन ज्ञान के धारक थे । और ये अपने ज्ञानबल से इस बात को जानते थे कि –

जइ पुण जीवंतेसुवि समणत्तणमहमहो पवज्जिस्सं ।
तो मम विरहेण धुवं एए जीयं चइस्संति ॥

(महावीरचरियं-४-१५)

'यदि माता-पिता के जीवित रहते हुये मैं दीक्षा ग्रहण करूंगा तो मेरे विरह से उन लोगों को बहुत बड़ा आघात लगेगा और जिससे निश्चित रुप से उनकी मृत्यु हो जायेगी ।'

भगवान महावीर इस बात को ज्ञानबल से जान रहे थे इसलिए माता-पिता की अकाल मृत्यु होने में स्वयं निमित्त न बने इसलिए भगवान ने वह अभिग्रह किया था ।

वर्तमान समय में अपने पास ऐसा कोई दिव्य ज्ञान न होने से भगवान महावीर स्वामी का दृष्टांत लेना भी अपने लिये उचित नहीं हैं ।

जब कि ऋषभदेव की विरह में रोने वाली मरुदेवा माता को उसी भव में केवलज्ञान और मोक्ष दोनों प्राप्त हो गया । और नेमिनाथ भगवान की विरह में बेहोश हो जाने वाले शिवादेवी और समुद्रविजय राजा को वैमानिक देवलोक की प्राप्ति हुयी ।

इस आधार पर स्पष्ट रुप से यह समझा जा सकता हैं कि माता-पिता को छोड़ कर दीक्षा लेने वाले भगवान को तो अनंत सुख की प्राप्ति हुई ही ! परंतु साथ साथ उनके माता-पिता भी उच्च गति को प्राप्त हुए । भगवान ने दीक्षा लिया तभी तो माता-पिता को भी वे सच्चे अर्थ में सुखी कर सके ।

इस तरह से भगवान महावीर के दृष्टांत को लेकर भी मुमुक्षु

आत्मा को संयम स्वीकार करने में देरी कराने जैसा नहीं हैं । इसमें ही मुमुक्षु का और उसके माता-पिता का सच्चा हित निहित हैं ।

जहाँ मंजिल निश्चित नहीं
जहाँ स्थानमें मर्यादा नहीं
जहाँ कालमैं औचित्य नहीं
जहाँ आचारमें शुद्धि नहीं
जहाँ भोजनमें विवेक नहीं
जहाँ केन्द्रमें प्रभु नहीं
अर्थात् संसार....
परन्तु
जहाँ मोक्ष ही मंजिल है
जहाँ तीर्थ ही स्थान है
जहाँ पल-पलकी सावधानी है
जहाँ पंचाचारकी शुद्धि है
जहाँ तप-त्यागकी भावना है
जहाँ केन्द्रमें प्रभु-भक्ति है
अर्थात् संयम....

प्रश्न 3: साहेबजी ! संसार में रहकर धर्म कहाँ नहीं होता ? यहाँ रहकर भी इसे जो आराधना करनी हो तो भले करें, हमारी इसमें जरा भी ना नहीं हैं ।

उत्तर : • संसार और धर्म इन दोनों के बीच में ३६ का अंक हैं । एक उत्तर ध्रुव हैं तो दूसरा दक्षिण ध्रुव ।

• संसार यह दावानल हैं इसमें राग-द्वेष की आग के अलावा और कोई तीसरा विकल्प ही नहीं हैं ।

• संसार यह कतलखाना हैं या तो मरो या मारो इसके अलावा और कोई तीसरा विकल्प ही नहीं हैं ।

• एक एक पाप अनंत दुःखो को खींच कर ले आने की सामर्थ्य रखता हैं । यह संसार अट्ठारह अट्ठारह पापस्थानकों से खदबद रहा हैं । जीवों को मारे बिना, काटे बिना, छुंदे बिना, दबाये दिना, चूंथे बिना, कचड़े बिना, फोड़े बिना, तपाये बिना, बोये बिना, दुःख दिये बिना, यह संसार चल ही नहीं सकता ।

• थोड़ा बहुत झूँठ बोले बिना यहाँ जिया ही नहीं जा सकता ।

• मन से भी अब्रह्म का सेवन न किया जाय यह यहाँ लोहे के चने चबाने जैसा हैं ।

• आसक्ति ने तो पूरे संसार को जोर-शोर से घेर लिया हैं ।

• राग-द्वेष के तुफान तो यहाँ हमेशा चालू ही रहते हैं ।

• लड़ाई, झगड़ा और दुःख से मुक्त एक परिवार भी नहीं रह सका हैं ।

• क्रोध तो मानो राजरोग बन गया हैं ।

• माया, दंभ, कपट आदि की गिनती एक कला के तरीके से हो रही हैं ।

• अहंकार का अजगर जहाँ तहाँ अपनी फूँक मार रहा हैं ।

• आस्तिकता अंतिम श्वाँस ले रही हैं ।

ऐसे संसार में रह कर 'धर्म' करने की आशा रखना यह भी एक प्रकार की मूर्खता ही हैं ।

यह संसार बदबूदार गटर हैं। लोगों के द्वारा किया जाने वाला थोड़ा बहुत धर्म यह अत्तर की बूँद के समान हैं। परंतु यह गटर तो इस बूँद का अस्तित्व ही समाप्त कर देती हैं।

जरा सोचो,

आप इस संसार में रहकर कितना धर्म कर सकते हो ?

आप इस संसार में रहकर कैसा धर्म कर सकते हो ?

लगभग हररोज २२ घंटे उत्साहपूर्वक किया जाता हुआ पाप और किसी तरह से मात्र २ घंटे अविधि आशातना से परिपूर्ण धर्म, तो ऐसा धर्म आत्मा को पापमुक्त-कर्ममुक्त कैसे कर सकता हैं ? इस गटर के अंदर अत्तर की सुरक्षा तो संभव ही नहीं हैं। संभव यही हैं कि आप गटर में से बाहर निकल जाँय। शुद्ध और पूर्ण धर्माराधना संयम जीवन के अलावा संभव ही नहीं हैं।

इसलिए महानिशीथ सूत्र तो यहाँ तक कहता हैं कि –

जो कारवेज्ज जिणहरे, तओ वि तवसंजमो अणंतगुणो।

सोने के जिनालयो से पृथ्वी का श्रृंगार कर दो उससे भी संयम जीवन की आराधना अनंतगुना फलदायी हैं।

जिस चारित्र को प्राप्त करने के लिए समकिती देव भी व्याकुल रहते हैं तड़पते रहते हैं फिर भी प्राप्त नहीं कर सकते। ऐसे दुर्लभ चारित्र को लेने के लिये यदि आपकी संतान थनगनती हो तो आपको उसे सहर्ष अनुमति और आशीर्वाद ही देना हैं। बाकी संसार में रहकर किया जाने वाला धर्म यह तो मेरु जितने पापो के सामने रेती के एक कण समान हैं। जिसका कोई भी अधिक मूल्य नहीं हैं।

संयम एक ऐसा जलजहाज है कि जो उसका आश्रय लेता है उसे भवसमुद्रके किनारे पहुँचा देता है।

प्रश्न-4. अभी यह छोटा हैं । यह क्या छोड़ रहा हैं इसका ही इसे ज्ञान नहीं हैं । जो समझ ही न हो तो उसे दीक्षा के लिए आज्ञा किस तरह से दी जाय ?

उत्तर : दीक्षा लेने की भावना वाले खास करके बच्चों को महात्मा लोग संयम जीवन के विषय में पूरी समझ तथा यथायोग्य ट्रेनिंग भी देते हैं । और उस दीक्षा लेने की इच्छा रखने वाले बालक को बराबर ख्याल हो ही जाता हैं कि दीक्षा लेने के बाद साल में दो बार लोच कराना होगा ।

पैदल चलकर विहार करना होगा ।

A.C. - पंखे का आजीवन त्याग करना होता हैं ।

Cold Drinks & Ice-Cream - का सदंतर त्याग करना होता हैं ।

T.V. - को थोड़ा सा भी नहीं देखना हैं ।

Mobile - का उपयोग नहीं करना हैं ।

मम्मी पापा को छोड़कर उपाश्रय में ही रहना हैं ।

गरमी ठंडी मच्छर को सहन करना हैं ।

रात में पानी की एक बूँद भी नहीं पीना हैं ।

गुरु भगवंत जो दे वही गोचरी वापरनी हैं ।

पूर्णतः गुरु की आज्ञा में ही समर्पित रहना हैं ।

किसी भी विजातीय का स्पर्श तक नहीं करना हैं ।

हररोज दोनों समय प्रतिक्रमण-पडिलेहण करना हैं ।

स्नान नहीं करना हैं ।

रोज धोये हुये कपड़े मिलने वाले नहीं हैं ।

अपनी पसंदीदा बाजार की बिस्किट चोकलेट खानी नहीं हैं ।

इसमें से बालक के लिए एक भी वस्तु ऐसी नहीं हैं जिसके बारे में वह अनजान हो । फिर भी 'यह क्या छोड़ता हैं इसका इसको ज्ञान नहीं हैं' ऐसा कहना इसके साथ पूर्वग्रह के अतिरिक्त और दूसरा क्या कहा जाय ? आश्चर्य तो इस बात का होता हैं कि बालक को जातीय शिक्षण के नाम पर मात्र गंदगी परोसने को उत्सुक लोगों के सामने जब विरोध प्रदर्शित किया जाता हैं तब उन लोगों का तर्क होता हैं कि, 'भाई ! अभी तो बच्चे आठ से दस वर्ष की आयु में ही इतने परिपक्व मेच्योर्ड हो जाते हैं कि उनको सभी बातों की जानकारी होने लगती हैं । आज के छोटे बच्चों को अब छोटा नहीं कहा जा सकता हैं ।'

जातीय शिक्षण देना हो तब जिन्हे आज के बच्चे प्रौढ जैसे लगने लगते हैं । वही लोग दीक्षा ग्रहण करने वाले बालक को नासमझ किस तरह से कहते हैं ?

एक बात खास ध्यान में रखने जैसी हैं कि दीक्षा लेने के लिये उंमर से ज्यारा जरुरी वैराग्य हैं । और यह वैराग्य बहोत बहोत बहोत से लोगोको बडे होकर, लग्न करके परिवार स्थापित करने के बाद भी नहीं होता उसका क्यां कारण हैं ? उसका जवाब दे सकेंगे ?

हे परमात्मा !
आज तक में संसारमें बहुत भटका,
और बहुत दुःखी हुआ ।
लेकिन अब चलना है
तेरे मार्ग पर और करनी है
आनंदयात्रा...

प्रश्न 5: छोटी उम्र में दीक्षा लेने के बाद पीछे से उसको अनुकूल न आये तो क्या जीवन भर के लिये प्रतिज्ञा लेने के बाद पीछे से पछताना पड़े इसकी अपेक्षा बड़ा होने पर ही निर्णय करें तो इसमें गलत क्या हैं ?

उत्तर : यह प्रश्न तो संसार में भी कहाँ नहीं आता हैं । जो इस तरह से हमेशा नकारात्मक विचार ही किया करे वो तो शादी भी नहीं कर सकेगा । आज यह लड़की अच्छी लग रही हैं बाद में इसके साथ अच्छा न लगे तो ?

लडकी जो ऐसा विचार करे कि आज तो यह घर बहुत अच्छा लगता हैं लेकिन शादी के बाद वहाँ अच्छा न लगे तो ?

धंधा करने वाला व्यक्ति यदि ऐसा सोचता रहे कि – 'चाहिए उतनी आमदनी न हो तो, नुकशान जायगा तो, दिवाला निकल जायगा तो ?'

अर्थात् पीछे से पछताना पडे ऐसी संभावना संसार में भी कहाँ नहीं हैं ।

इसलिए किसी भी निर्णय में मात्र आयु का विचार ही करना नहीं होता । बल्कि दूसरे परिबलों का भी निरीक्षण करना होता हैं ।

इक्कीस और अट्ठारह वर्ष की न्यूनतम आयु लग्न के लिए निश्चित की गयी हैं । युवानी में निर्णय लेकर किये जाने वाली शादी में निष्फल होने का प्रमाण कितना ? विवाह के बाद पछताने का अनुभव करने वालों की टकावारी कितनी हैं ?

सगाई टूट जाना यह तो जाने एक बहुत ही सहज घटना हो गयी हो । निर्णय परिपक्व उम्र में किया जाता हैं । जीवनभर के कमिटमेन्टस इस निर्णय में भी समायें हुए हैं । क्या निर्णय लेने के लिए इक्कीस वर्ष की उम्र भी कम कही जायगी ?

C.A. या एन्जिनियरिंग कोर्ष करने का निर्णय लेने के बाद यह कोर्ष लंबा हैं, कठिन हैं ऐसा लगने से पछताने का अनुभव वहुत से विद्यार्थियों को होता हैं । क्या निर्णय लेने की यह उमर भी छोटी कही जायगी ?

लड़का लड़की को दस बारह वर्षकी आयु से ही स्वतंत्र मोबाइल दे देने के बाद फिर ज़ो गलती हो गयी हैं उसका अनुभव कितने माँ-बाप को होता हैं । क्या निर्णय लेने के लिए उन माँ-बाप की उम्र भी छोटी मानी जायगी ?

इन सब के सामने दीक्षित होने वाले और दीक्षा दिलाने वाले अभिभावकों को इस प्रकार पछताने की नौबत नहीं आती हैं । इसलिए छोटी उम्र में दीक्षित होने के विषय में यह प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता ।

- संतप्तता में भी शीतलता की अनुभूति करें
  उसका नाम साधु
- प्रतिकूलतामें भी जिसकी प्रसन्नता को आँच न आयें
  उसका नाम साधु
- सदैव समभावमें लीन रहे
  उसका नाम साधु
- अस्तित्वका प्रत्येक प्रदेश उपदेश बने
  उसका नाम साधु

प्रश्न 6. संसार में कमाना न पडे इसलिए साधु बनकर बैठ जाना हैं । मुफ्त में खाना पीना और पूरे दिन बेकार बैठे रहना ।

उत्तर : यह बात भी हास्यास्पद ही हैं ।

यदि कमाना न पडे इसलिए साधु बनना होता तो आज दुनिया भर में जितने भिखारी हैं, जितने बेकार हैं, जितने अशिक्षित हैं और जितने Unskilled हैं वे सभी साधु बन गये होते परंतु ऐसा तो हैं ही नहीं ।

इसके विपरीत जो खूब पढ़े लिखे हैं, धनाढ्य परिवार से हैं, जिनके पास बहुत अधिक Income के स्त्रोत हैं, जो अद्भूत Skill वाले हैं, जो अनेक व्यक्तियों को मुफ्त में आजीवन खिला पिला सकें ऐसे हैं, ऐसे किसी भी व्यक्ति ने दीक्षा न ली होती परंतु ऐसा भी नहीं हैं ।

रही बात बेकार बैठे रहने की तो जो व्यक्ति साधु साध्वी के जीवन को नजदीक से जानता मानता नहीं हैं उस व्यक्ति को इस विषय में अपना अभिप्राय देने की कोई जरुरत नहीं हैं ।

पहले आप बाल साधु-साध्वी से लेकर वयोवृद्ध साधु-साध्वी की आराधना को जानो । जान लेने पर आपके सभी भ्रम चकनाचूर हो जायेंगे । उनकी अप्रमत्त साधना आपकी आँखें खोल देगी । आपके दिमाग को शीतल कर देगा । आपके हृदय को द्रवित कर देगा । आपका मस्तक अहोभाव से झुक जायगा । सदैव आप उन्हें इस कलिकाल में जीवंत परमात्मा के रुप में ही देखोगे । इसके लिए पढ़ो पुस्तक – વિશ્વની આધ્યાત્મિક અજાયબી ભાગ-૧,૨,૩,૪.

इसके अतिरिक्त श्री हरिभद्रसूरि म. कहते हैं कि –

लेशतोऽपि विहितानुष्ठानाऽनादरस्य दुरन्तसंसारहेतुत्वात् ।

वीतराग सर्वज्ञ भगवंत के बताये हुये मार्ग को अपलाप करना यह अपने अनंत जन्म मरण को आमंत्रण देने का मार्ग हैं । ऐसे कठोर सजा के पात्र आप न बनो इसलिए सावधान हो जाओ ।

प्रश्न : 7 मोक्ष प्राप्त करने के लिए दीक्षा लेनी हैं । परंतु चाहे जितनी साधना करो, फिर भी इस भव में तो मोक्ष होना ही नहीं हैं । तो इस भव में दीक्षा ले कर क्या करोगे ?

उत्तर : मोक्ष तो दीक्षा का अंतिम लक्ष्य हैं ।

जो प्रायः कुछ भवों की साधना के बाद ही मिलता हैं । सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र यह मोक्ष प्राप्ति का मार्ग हैं । इन तीनों का प्रकर्ष ही मोक्ष देगा । परंतु इन तीनों की आराधना की शुरुआत तो इस भव में ही करनी पड़ेगी । इस भव में जितना मार्ग पसार हो जायगा आने वाले भव में वहीं से मोक्ष मार्ग पर आगे बढ़ना होगा । जो इस भव में शुरुआत ही न करे तो आगे की यात्रा शुरू ही नहीं होगी ।

व्यवहारिक जगत में भी प्रत्येक कार्य कहीं तुरंत फलदायी नहीं होते । उसके लिए भी निश्चित मिनट, घंटे, दिन या वर्ष की जरुरत होती हैं ।

जैसे कि - किसी बालक को C.A. बनना हो तो उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वह 10th और 12th में खूब मेहनत करता हैं । तो उसे ऐसा तो नहीं कहा जा सकता कि तु चाहे जितनी मेहनत कर परंतु इस वर्ष में तु C.A. बनने वाला नहीं हैं । अतः जिस वर्ष C.A. बन सकता हो उसी वर्ष मेहनत करना ।

ऐसा इसलिए नहीं कहा जाता क्यों कि हम सभी लोगों को मालुम हैं कि भले इस वर्ष C.A. न बन पायें । परंतु जब भी C.A. बनना होगा तब इस Process से गुजरना ही होगा । इसके अलावा Direct C.A. बना जाय ऐसा कोई वर्ष आने वाला ही नहीं हैं । इस प्रकार जैसे C.A. बनने के इच्छुक व्यक्ति उसी वर्ष C.A. नहीं बन सकनेका निश्चित होने के बाद भी 10th और 12th में मेहनत करते ही हैं । उसी तरह मोक्ष प्राप्ति की इच्छा रखने वाला मुमुक्षु इस भव में

तो मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकनेका निश्चित हैं फिर भी संयम स्वीकार करके साधना करने की इच्छा रखता ही हैं । क्योंकि जैसे C.A. बनना कुछ वर्षों की मेहनत से ही साध्य हैं, इसी प्रकार मोक्ष की प्राप्ति भी अधिकतम लोगों को कुछ भवों की साधना से ही साध्य हैं ।

अतः मोक्ष के लक्ष्य से साधना के मार्ग में आगे बढ़ने के लिए इस भव में दीक्षा लेने की जरूरत हैं भले ही इस भव में मोक्ष न होना हो ।

कर्मशत्रुओं के सामने अद्भुत शूरवीरता दिखानेवाला
गजराज अर्थात् संयम...
उपसर्गो और परिसहो को जीतनेवाला
केशरी अर्थात् संयम...
शरणागतनो परम शीतलता देनेवाला
चन्द्र अर्थात् संयम...
उग्रतपके तेजसे प्रकाशित
सूर्य अर्थात् संयम...
सबका सब-कुछ सहन करनेवाली
पृथ्वी अर्थात् संयम...
किसी भी बात को अपने अंदर समाहित कर लेने वाला
सागर अर्थात् संयम...
राग-द्वेष के लेप से अलिप्त
कमल अर्थात् संयम...

प्रश्न : 8 'दीक्षा लेकर आत्म कल्याण कर लेना' इसे तो स्वार्थ भाव कहा जाता हैं । इसकी अपेक्षा संसार में रह कर समाज सेवा, विश्वहित की किसी प्रवृत्ति को करना अत्यधिक कल्याणकारी हैं । इस तरह से सेवा कार्य के द्वारा आत्मकल्याण क्या नहीं किया जा सकता ?

उत्तर : प्रधानताये आत्मकल्याण के लक्ष्य से संयम स्वीकारने वाले श्रमण-श्रमणी भगवंतो द्वारा अनायास ही खूब उत्तम विश्वोपकार तो होता ही रहता हैं ।

श्री षोडशक प्रकरण में हरिभद्रसूरि म.साहेब कहते हैं कि –

विहितानुष्ठानपरस्य विशुद्धमनोवाक्काययोगस्य यतेः
भिक्षाटनादिसर्वं परार्थकरणम् ॥

जिनाज्ञानुसार जीवन जीने वाले श्रमण-श्रमणी की प्रत्येक क्रिया में प्रत्येक प्रवृत्ति में परोपकार समाया हुआ होता हैं ।

चलो, अच्छे से अच्छा समाज सेवक के साथ तुलना करके इस बात को समझने का प्रयास करें ।

• क्या आपने ऐसे किसी समाज सेवक को देखा हैं ? जिसने कटते हुए जंगलों को देख करके संकल्प किया हो कि मैं आजीवन कभी भी वनस्पतियों की एक पत्ती तक नहीं तोडूँगा ।

• क्या आपने ऐसे किसी समाज सेवक को देखा हैं ? जिसने नष्ट होते हुये खनिज तत्त्वों को देख कर संकल्प किया हो कि मैं कभी भी वाहन का उपयोग नहीं करूंगा ।

• क्या आपने किसी ऐसे समाज सेवक को देखा हैं ? जिसने ग्लोबलवोर्मिंग की चिंता के कारण आजीवन

Electricity के उपयोग का त्याग कर दिया हो ।

क्या आपने ऐसे किसी समाज सेवक को देखा हैं ? जो पीने लायक मीठे पानी के स्त्रोत को कम होते हुए देख करके आजीवन स्वयं अधिकतम हररोज ५-६ लीटर पानी के द्वारा २४ घंटे चला लेता हो ।

क्या आपने ऐसे किसी समाज सेवक को देखा हैं ? जिसने भिखारी और गरीब के भूख के कारण अंदर की तरफ घुसे हुये पेट को देखकर ऐसा संकल्प किया हो कि मैं कभी भी मेरी थाली में लिये हुये भोजन के एक दाने को भी जूँठा नही छोडूँगा । थाली खाने के समय जैसी ली थी वैसी ही खाने के बाद साफ करके रखूँगा ।

क्या आपने ऐसे किसी समाज सेवक को देखा हैं ? जिसने कतलखाना और Animal Export द्वारा होने वाली महाहिंसा को देख करके छोटे से छोटे चींटी जैसे जीव की भी मेरे द्वारा मृत्यु न हो उसके लिए सावधानी रखनी चालू कर दी हो ।

क्या आपने ऐसे किसी समाज सेवक को देखा हैं ? जिसने बलात्कार की भोग बनी हुयी व्यक्ति को देख करके स्वयं आजीवन विजातीय का स्पर्श तक न करने की प्रतिज्ञा ले ली हो ।

क्या आपने ऐसे किसी समाज सेवक को देखा हैं ? जिसने फटे हुये कपड़े वाले गरीब के बच्चे को देख करके आजीवन एक ही रंग के और एक ही प्रकार के एकदम सादे कपड़े को स्वीकार लिया हो ।

• क्या अपने ऐसे किसी समाज सेवक को देखा हैं ? जिसने ग्रीष्मऋतु की चिलचिलाती गरमी में छप्पर के नीचे तपते हुए गरीब परिवार को देख करके आजीवन पंखा, A.C., कूलर का त्याग कर दिया हो ।

क्या आपने ऐसे किसी समाज सेवक को देखा हैं ? जिसने सौन्दर्य प्रसाधनों के निर्माण में होने वाली महाहिंसा को ले करके आजीवन कोस्मेटिक वस्तुओं का उपयोग न करने के साथ साथ सर के बाल में कंघी करने का भी त्याग कर दिया हो ।

आज के कहे जाने वाले समाज सेवकों के जीवन पर नजर करके देखो । एक में भी उपरोक्त तमाम वस्तुयें देखने को भी नहीं मिलेंगी । परंतु उपरोक्त तमाम वस्तुयें श्रमण-श्रमणी भगवंत के जीवन में देखने को मिलेंगी । (भले ही यह त्याग सहजतासे श्रमणाचार के आधार पर कराया जाता हो ।)

सूट-बूट और टाई का त्याग करने वाले गाँधीजी को 'राष्ट्रपिता' की पदवी मिलती हो तो उपरोक्त तमाम वस्तुओं का आजीवन त्याग करने वाले प्रत्येक श्रमण-श्रमणी भगवंत को विश्वपिता, त्रिलोकपिता क्यों न कहा जाय ???

सिर्फ समाज सेवा संबंधी कुछ कार्यो को करते रहना और साथ साथ अपने जीवन द्वारा थोड़ी बहुत मात्रा में समाज-विश्व को नुकशान करते रहना इसकी अपेक्षा पहले अपने जीवन को सुधार लो । अपने द्वारा समाज-राष्ट्र-विश्व को बिल्कुल नुकशान न पहुँचाना और उसके बाद शक्ति अनुसार समाज सेवा करना वही योग्य हैं ।

इस तरह से श्रमण-श्रमणी भगवंत समाज और विश्व में नुकशानकारक प्रवृत्ति बिल्कुल भी नहीं करते । और उसके साथ साथ समाज और विश्व के ऊपर उपकार भी करते रहते हैं ।

एक अंदाज के मुताबिक हररोज कम से कम एक हजार स्थानो में श्रमण-श्रमणी भगवंतो के प्रवचन चलते होंगे । जिसके माध्यम से सुनने वाले हजारो लाखो के जीवन में गुणविकास और ज्ञानवृद्धि होती रहती हैं ।

पैदल चलकर विहार करने के कारण साधु-साध्वीजी अंतरियाल गाँवो में भी पहुँच सकते हैं । जिससे गाँवों को भी यह लाभ मिलता हैं ।

साधु-साध्वीजी के उपदेश से हजारो गरीब परिवारों को पोषण मिलता रहे उसकी व्यवस्था जैन संघो, श्रेष्ठियों और फाउन्डेशनों द्वारा बहुत सी जगहों पर चलती रहती हैं । करोडो का सद्व्यय प्रतिवर्ष इस प्रकार साधु-साध्वीजी की प्रेरणा और मार्गदर्शन के द्वारा होता रहता

हैं ।

साधु-साध्वीजी के उपदेश से लोग करुणा, दया आदि भावों से भावित बनते हैं । और बाद में उन्हीं के द्वारा अबोल पशुओं के लिए घासचारा, गरीबों की दया, अनेक स्थानों पर गरीबों के लिए चलाये जाने वाले खिचड़ी घर, सदाव्रत और छास केन्द्रों के द्वारा प्रतिदिन हजारों को शान्ति मिलती हैं ।

कुदरती आपत्ति के प्रसंग में भी महात्मा का समयोचित मार्गदर्शन गजब के कार्य का बीज बनता हैं ।

आज सेंकडो-हजारों प्राचीन शास्त्रग्रंथ और संस्कृत-प्राकृत भाषा भी जो टिक सकी हैं तो वह भी श्रमण-श्रमणी भगवंतो की आभारी हैं ।

श्रमण-श्रमणी भगवंत होस्पिटल में जा करके bed to bed सर्विस नहीं देते फिर भी आहारसंयम और व्यसन रहित संयमित जीवन के उपदेश से लोगों को ऐसी स्थिति में लाकर रख देते हैं कि Hospital में जाने का कारण ही पैदा न हो ।

सदाचार और सज्जनता के उपदेश के द्वारा अनेकों के जीवन में से गुनाह और मन में से गुन्हाखोरी को निर्मूल करनेका श्रमण-श्रमणी भगवंतो का काम, गुनहगारों को पकड़ती पुलिस के कार्य की अपेक्षा बहुत ही उत्तम कार्य कहा जाय ।

किसी वृद्धाश्रम को बनाने वाले की अपेक्षा वृद्धों और प्रौढों की सेवा औचित्य का उपदेश दे करके पाँच-दस वृद्धाश्रम को खुलने की संभावना को ही रोक देने वाले श्रमण-श्रमणीयों का स्थान बहुत ऊँचा कहा जाय ।

श्रमण-श्रमणी भगवंतो के मैत्रीभाव और क्षमापना के असरकारी उपदेशों से कितनों के जीवन में आनेवाले संघर्ष विदा हो

जाते हैं । भारत की प्रत्येक अदालतों में हजारो लाखों केस पेंन्डिग पड़े रहते हैं तब तो केस लड़नेवाले वकील की अपेक्षा नये केसो को जन्म लेने से ही रोक देने वाले का उपकार बहुत बड़ा कहा जायगा ।

इस तरह से मध्यस्थ भाव से सोचने पर यह निश्चित रुप से दिखायी पड़ता हैं कि समाजसेवा और श्रेष्ठ विश्वहित करने के लिए भी साधु जीवन सबसे श्रेष्ठ उपाय हैं ।

- आंतरिक शत्रुओं से रक्षा करनेवाला राजा है सद्गुरु ।
- आंतरिक दोषों की चिकित्सा करनेवाला वैद्य है सद्गुरु ।
- जीवनमें ज्ञानका प्रकाश बिछानेवाला सूरज है सद्गुरु ।
- प्रतिकूल परिस्थिति में सच्चा मार्गदर्शन देनेवाला ध्रुव का तारा है सद्गुरु ।
- सदा वात्सल्य की छाया देनेवाला वटवृक्ष है सद्गुरु ।
- परमात्मा के साथ मिलाप करा देनेवाला सेतु है सद्गुरु ।
- सद्गुणों को जीवंत रखने के लिए प्राणवायु है सद्गुरु ।
- मलिन विचारों को जला देनेवाली अग्नि है सद्गुरु ।
- प्रभु के वचनों को प्रतिबिंबित करनेवाला दर्पण है सद्गुरु ।

प्रश्न-9 आजकल शिष्यों की लालच में साधुओं छोटे बच्चों को बहला-फुसलाकर दीक्षा दे देते हैं । बाकी छोटे बच्चों को दीक्षा का मन कहाँ से हो जाता हैं ?

उत्तर : कुछ बुद्धिजीवी कहे जाने वाले लोगो को 'साधु' शब्द से ही एलर्जी होने से वे लोग ऐसा दुष्प्रचार करते है । पहली बात यह हैं कि बालक उसको कहते हैं जो आँख से देखी चीजो को पकड़ ले । भविष्य के सुख के कारण वर्तमान के सुख को जाने दे इस बात को सामान्य से चाइल्ड सायकोलोजी नहीं अपितु मेच्योर्ड सायकोलोजी कहा जाता हैं ।

बच्चे परीक्षा के समय में भी खेलना बन्द नहीं कर सकते । कारण कि केरियर का सुख यह भविष्य का सुख हैं । और खेल का सुख यह वर्तमान का सुख हैं । बालक लगभग वर्तमानजीवी होता हैं । परंतु कुछ छोटी उम्र से ही व्यवस्थित पढ़ते हुये दिखायी पड़ते हैं तो उन्हें स्थिरबुद्धि, समझदार और विवेकी कहा जाता हैं इसका अर्थ यह हैं कि असामान्य किस्साओ में ही ऐसा होता हैं कि बचपन में भी मेच्योर्ड सायकोलोजी होती हैं । तो ऐसे किस्से में दिखायी देने वाला बालक अंदर से प्रबुद्ध होना चाहिए ।

छोटे बच्चो को बहला फुसलाकर दीक्षा दिला कर शिष्यों को बढ़ाने की बात में कोई भी दम इसलिए नहीं हैं क्योंकि -

• शास्त्र शिष्य स्वीकार करने के लिए भी साधुओं का करुणाभाव ही बताते हैं, लालचूपना नहीं ।

अनुग्रहधियाऽभ्युपगमः

(धर्मबिन्दु-४ अध्याय)

• बीस हजार साधु-साध्वीजी के बीच में सालभरमें ६,८ या १० छोटे बच्चों को प्रशिक्षण और परीक्षा लेने के बाद ही दीक्षा दी जाय तो कौन सी बहुत बड़ी शिष्य वृद्धि होती है जिसके लिए उसे

फुसलाना पड़े ।

• यदि किसी भी बालक को फुसला कर दीक्षा दे दी जाय तो वह बालक एक दिन भी साधु जीवन का पालन नहीं कर सकता हैं । साधुओं को जो सभी नीति नियम पालने होते हैं उनको पूरी इच्छा और समझदारी के बिना पाला जा सके ऐसा नहीं होता ।

किसी भी व्यक्ति को यदि जबरदस्ती फुसला कर दीक्षा दी जाती हैं तो यह व्यक्ति २४ घंटे में ही थक हार करके अपने घर पहुंच जाता हैं । दुनिया की कोई भी ताकत उसे रोक नहीं सकती । और यदि कोई व्यक्ति दीक्षा जीवन में रह जाय तो निश्चित मानना कि उस व्यक्ति ने समझदारी के साथ और राजीखुशी से दीक्षा ग्रहण की हैं ।

• हजारों जैन बालको में से सालमें आठ दस को ही दीक्षा के भाव पैदा होते हैं जो यही बताते हैं कि पूर्वभव की कोई योगभ्रष्ट आत्मा ने अपनी अधूरी साधना को पूरी करने के लिए संस्कारी कुटुंब में जन्म लिया हो ।

शुचीनाम् श्रीमताम् गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ।

वर्तमान में जो आचार्य के सुंदर पद पर विराजमान हैं और प्रभावशाली शासनप्रभावना कर रहे हैं ऐसे बाल दीक्षित आचार्य भगवंत से पूँछ लेना कि "आपके गुरुजी ने आपको बहला फुसला कर दीक्षा दी थी ऐसा लगता हैं सही ?"

बाकी साधु के प्रति द्वेष भावना से जो ऐसा दुष्प्रचार किया जाता हो तो ऐसे लोगों को शास्त्रकार चेतावनी देते हुये कहते हैं कि –

न युज्यते प्रतिक्षेपः सामान्यस्यापि तत्सताम् ।
आर्यापवादस्तु पुनर्जिह्वाच्छेदाधिको मतः ॥

(योगदृष्टि-१४१)

सामान्य मनुष्य की भी निंदा नहीं करना । इसमे भी देव-गुरु की निंदा तो भूल से भी नहीं करना ।

जो तुम्हारे पास दो ही विकल्प हो - १. या तो देव-गुरु की निंदा करो २. या तो जीभ कटा देने की सजा भोगो । तो दूसरे विकल्प को पसंद कर लेना । क्योंकि पहले विकल्प की पसंदगी तो जीभ कटने के दुःख की अपेक्षा अनंत गुना दुःख को खींच कर लाने वाली हैं ।

शास्त्रकारों की इस बात को गंभीरता से समझो और सुसाधु की निंदा रुपी महापाप में से बच जाओ यही प्रार्थना ।

सूर्यमुखी हमेंशा अपना मुख सूर्यकी
ओर रखता है ।
उसी तरह सच्चा साधक हमेंशा
अपना मुख प्रभु और गुरु की
ओर रखता है ।

प्रभु को प्राप्त करने के लिए
१. अतूट श्रद्धा
और
२. अखूट समर्पण चाहिए ।

प्रश्न नं. 10 पहले के जमाने में साधुओ अच्छे सच्चे और संयमी थे । लेकिन आज तो सभी स्थानो पर शिथिलाचार फैल गया हैं । दीक्षा लेना आसान बन गया हैं । फिर भी पालन में सभी स्थानों पर गड़बड होने लगी हैं । दीक्षा लेकर गड़बड़ करना उसकी अपेक्षा श्रावक बनने में क्या गलत हैं ?

उत्तर : जैसे पहले के समय में अच्छे सच्चे और संयमी साधु थे उसी तरह से आज भी अच्छे सच्चे और संयमी साधु मौजूद हैं । यह केवल अध्धरताल बात नहीं हैं, वर्षो से श्रमण जीवन के पालन द्वारा-वर्षो से अनेकानेक श्रमणों के साथ परिचय द्वारा स्व अनुभव से जानी हुयी सच्चाई हैं ।

बाकी जिनशासन स्याद्वादमय हैं ।

जिनशासन में अनेकान्तवाद हैं ।

● 'अब सभी जगह पर शिथिलाचार फैल गया हैं' ऐसी बात करने वालों से मुझे पूँछना हैं कि –

भाई, क्या आप सभी साधुओं से मिले हो ?

क्या आपने सभी साधुओं को नजदीक से जाना हैं ?

क्या आपने शास्त्रों के रहस्यों को समझा हैं ?

क्या आप जिनशासन के उत्सर्ग और अपवाद को जानते हो ?

क्या आप ज्ञाननय और क्रियानय को जानते हो ?

क्या आप प्रमाण और नय को जानते हो ?

क्या आप द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव की व्यवस्था को जानते हो ?

क्या आप कल्प्य-अकल्प्य की मर्यादा को जानते हो ?

क्या आप बाल-वृद्ध-ग्लान आदि अवस्था में किये जाते हुये प्रयत्न को जानते हो ?

क्या आप जिस किसी भी समुदाय की सामाचारी से सुपरिचित हो ?

क्या आप एक भी संविग्न-गीतार्थ गुरु को पूर्णतया समर्पित हो ?

क्या आपने अपनी मान्यता को मुक्त मन से किसी गीतार्थ गुरु के सामने वर्णित किया हैं ?

क्या आपने किसी गुरु भगवंत के पास से समाधान प्राप्त करने का प्रयास किया हैं ?

क्या आपको बाह्य आचार संबंधी आपवादिक आचरण के पीछे के कारणों का ज्ञान हैं ?

क्या आप दोष सेवन के बाद पश्चात्ताप से होते हुए सुविशुद्ध प्रायश्चित्त को जानते हो ?

क्या आप द्रव्य-गुण और पर्याय को समझते हो ?

यदि आप जिनशासन की मर्यादा कों पूर्णरुप से जानते नहीं हो तो आपको जिनशासन और जिनशासन के उन अंगो कों अपनी विपरीत बुद्धि से गलत कहने का क्या अधिकार हैं ?

याद रखो कि - जैसे Medical Line को न समझने वाले गँवार व्यक्ति को Doctor को सलाह देने या Doctor को गलत कहने का कोई अधिकार नहीं हैं ।

जैसे न्याय शास्त्र को न जानने वाले व्यक्ति को वकील को सलाह देने अथवा गलत कहने का कोई अधिकार नहीं हैं । इसी तरह से धर्मशास्त्रों को न जानने वाले व्यक्ति को धार्मिक अनुष्ठानोको अथवा धर्मगुरु को गलत कहने का कोई भी अधिकार नहीं हैं ।

लिख लो हृदय की दीवारों पर...

अपवाद मार्ग और शिथिलाचार इन दोनों के बीच बहुत ही पतली भेद रेखा हैं । जिसे गीतार्थ, शास्त्रज्ञ गुरुभगवंत ही जान-समझ सकते हैं । सामान्य व्यक्ति तो बाह्यदृष्टि मात्र से विपरीत खतौनी

भी किया ही करता हैं ।

हाँ, कहीं किसी में बड़े-बड़े महाव्रत संबन्धी दोष स्पष्ट रुप से जान पड़ते हैं तो उसे कर्मोदयजन्य, कालजन्य, निमित्तजन्य समझना चाहिये । और उससे वह व्यक्ति गलत साबित होता हैं । परंतु दो-चार व्यक्ति का दृष्टांत लेकर दूसरे हजारों अच्छे-सच्चे संयमी को भी उसकी तरह ही माना जाय इसे किस तरह से उचित कहा जाय ? आप यदि विवेक की आँखों से महात्मा का दर्शन करोगे तो कलिकाल में, कुनिमित्तों के बीच, विलासी वातावरण के बीच भी अनेकानेक गुणों के भंडार अद्‌भुत संयम की आराधना करने वाले भगवान महावीर के सच्चे वारसदार ऐसे संयमी भगवंतो का दर्शन होगा ।

जिससे आपकी आँखें आँसुओं के जल से परिप्लावित हो जायगी । आप तन से और मन से इनके सामने झुक ही जाओगे ।

आप को ऐसी विवेक दृष्टि मिले और उस दिव्यदर्शन को प्राप्त करो यही शुभाभिलाषा ।

बाकी तो साधुपनेमें रहकर साधु संबंधी आचारों में शिथिल होने वालों की अपेक्षा श्रावकपने में रहकर श्रावक संबन्धी आचारों में शिथिल होने वालों का प्रतिशत अनेक गुना अधिक हैं । अतः साधुता में शिथिलता को देखने का प्रयास करनेसे पहले श्रावकपने की शिथिलता को नजर में लाना चाहिये । यहाँ पर बहुत आसानी से साधुता की कीमत समझ पड़ेगी । महानता दिखायी देगी और दोषदृष्टि समाप्त हो जायगी ।

अवशेष दूर हो जाए तो शिला ही शिल्प है ।
दोषो दूर हो जाए तो आत्मा ही परमात्मा है ।
और दोषों को दूर करने का अमोघ साधन है
संयम...

प्रश्न 11: साहबजी ! लड़का जब तक आपके पास रहता हैं तब तक बराबर होता हैं परंतु जैसे ही घर आता हैं तब इसका वैराग्य अदृश्य हो जाता हैं । क्योंकि अभी इसका वैराग्य कच्चा हैं । बाकी सच्चा और पक्का वैरागी तो चाहे जैसी परिस्थिति हो उसमें भी वैराग्य को टिका कर ही रखता हैं ।

उत्तर : दीक्षा लेने के लिए व्यक्ति में वैराग्य होना चाहिये यह बात सही हैं । परंतु यह वैराग्य कितना हो तो उसे दीक्षा के लिये योग्य गिना जाय ? प्रायः लोगों की मान्यता ऐसी ही होती हैं कि दीक्षार्थी अर्थात् वैरागी । पूर्ण वैरागी । मानो के वीतरागी । वैराग्य की कसोटी में यदि दीक्षार्थी १०० में से १०० मार्क प्राप्त करे तो वह Pass नहीं तो Fail.

अब मुझे आप यह बताइये कि दुनिया की किस फिल्ड में १००% योग्यता वाले व्यक्ति को ही योग्य गिना जाता है ।

- क्या Doctor बनने वाले सभी १००% प्राप्त करके ही उत्तीर्ण हुए हैं ?
- क्या C.A. बनने वाले सभी १००% प्राप्त करके ही उत्तीर्ण हुए हैं ?
- क्या शादी करके घर आने वाली कन्या में शादी विषयक १००% योग्यता देखने को मिलती हैं ?
- क्या 10th Standard में १००% मार्क प्राप्त करनेवाला विद्यार्थी ही 11thवी कक्षा में जाने की योग्यता रखता हैं ?
- क्या इन्जीनीयर बननेवाले १००% मार्क प्राप्त करने वाले ही होते हैं ?
- क्या माता-पिता बनने वालो में भी माता-पिता बनने के लिए १००% योग्यता होती हैं ?

● क्या Teacher बनने वाले सभी १००% योग्यता वाले ही होते हैं ?

● क्या सासु श्वशुर में भी उस प्रकार की १००% योग्यता होती हैं ?

● क्या C.M. अथवा P.M. बनने वाले व्यक्ति १००% लोक मत को प्राप्त करके ही C.M. या P.M. बनते हैं ?

दुनिया के किसी भी फिल्ड में १००% योग्यता देखने को नहीं मिलती ? कहीं पर ३५% योग्यता, तो कहीं पर ५०% योग्यता अपेक्षित हैं। तो फिर दीक्षा के लिये मुमुक्षु की १००% योग्यता की अपेक्षा क्यों रखी जाती हैं ?

शास्त्रकारों ने दीक्षा की योग्यता के लिये १६ गुण बताये हैं। और अंत में यदि १६ गुण में से ८ गुण हो तो भी उसे योग्य माना जाता हैं।

पादार्द्धगुणहीनौ च, योग्यौ तौ मध्यमावरौ ॥

(धर्मसंग्रह-१३)

मुमुक्षु आत्मा वैरागी हैं, वीतरागी नहीं।

मुमुक्षु आत्मा साधना काल में हैं, सिद्धि दशा में नहीं।

इसलिए यह साधक हैं, सिद्ध नहीं।

और साधना काल में Ups & Downs होते ही रहते हैं।

और इसका मुख्य कारण हैं मुमुक्षु को दिया जाने वाला वातावरण। आप उसे जैसा वातवरण देंगे वह वैसा ही बनेगा। दूध में खोया बनने की योग्यता भी हैं तो फट जाने की भी योग्यता हैं। प्रश्न इतना ही हैं आप उसे कैसा वातावरण देते हो।

एकबार टोल्स्टोय को किसी ने एक लोहे का टुकड़ा बताते हुये पूँछा कि इसकी कीमत कितनी ? टोल्स्टोयने मार्मिक जवाब देते हुये कहा की 'आप उसे किस तरह से देखते हो उसके उपर उसकी कीमत निश्चित होती हैं। ऐसे तो इसका ८ आना मिलेगा। छोटी छोटी सुई बनाओ तो थोड़ा ज्यादा मिलेगा। घड़ी के बारीक स्पेयर पार्ट बनाओ

तो बहुत अधिक कीमत होगी । 'इट डिपेन्डस हाउ यु कल्टीवेट इट ।'

मुमुक्षु जब महात्मा के पास होता हैं तब उसे उसके वैराग्य की उत्पत्ति के लिये, वैराग्य की स्थिरता के लिये और वैराग्य की वृद्धि के लिये अनुकूल वातावरण मिल जाता हैं । अतः उस समय वह वैरागी होता हैं । घर पहुँचने के साथ ही उसे वैसा वातावरण न मिलने से उसके वैराग्य में कमी आती हैं । इसलिये शास्त्रकार भगवंत कहते हैं कि –

असदाचारसंसर्गवर्जनेऽपि यदि सदाचारसंसर्गो न स्यात् तदा न तथाविधा गुणवृद्धिः संपद्यते, तस्मात् संसर्गः सदाचारैः ।

(धर्मबिन्दु - १ अध्याय)

अधर्मी आत्माओं, पापी आत्माओं, अनाचार का सेवन करने वाली आत्माओं के संग को छोड़ने पर भी जो गुणवान, धर्मी, आचार संपन्न सज्जनों का साथ न किया जाय तो विशेष प्रकार के गुणों की वृद्धि नहीं हो सकती ।

इसलिए हमेशा सत्पुरुषों की संगति करनी ही चाहिये ।

• फिर भी यदि कोई ऐसा ही कहता हो कि सच्चा वैरागी किसी भी परिस्थिति में वैरागी ही रहना चाहिये तो फिर कल यह भी कहना पड़ेगा कि - सच्चा विद्यार्थी सभी जगह पर पढ़ सकना चाहिये । उसे School अथवा Tution की क्या जरुरत ? वह तो घर बैठे बैठे भी पढ़ सके । जिसे School अथवा Tution की जरुरत पड़े, जिसे School अथवा Tution के वातावरण की और घर के वातावरण की अच्छी बूरी असर हो वह गलत विद्यार्थी । क्यों कि सच्चे विद्यार्थी को वातावरण की जरुरत कैसी ?

सच्चा Doctor तो किसी भी वातावरण में सफल Operation कर ही सकना चाहिये । फिर भले ही वह Operation थियेटर हो या कादव-कीचड़ गंदगी और मच्छर वाली जगह । जिसको वातावरण के प्रभाव की जरुर हो वह गलत Doctor.

सच्चा Painter तो किसी भी वातावरण में Proper Paint कर

सकना चाहिये । फिर भले ही वह कागज, केनवास, Colour-ब्रश लेकर घर में बैठा हो या फिर खुले आकाश के नीचे बरसते बरसात के बीच बैठा हो । जिसे वातावरण की असर लगे वह गलत Painter.

सच्चा स्केट्स चैम्पियन तो Smooth रोड पर भी स्केटिंग कर सकना चाहिये और समुद्र के रेतीले पट पर भी उसी तरह से स्केटिंग कर सकना चाहिये बाकी वह खोटा ।

निर्मल लोचन धारक व्यक्ति को तो सभी स्थानों पर सब कुछ Clear दिखायी देना चाहिये । भले ही वहाँ सूर्य-Light या टोर्च का प्रकाश हो कि फिर अमावस्या की काजल जैसी काली घोर अँधेरी रात हो । निर्मल लोचन वाले को भला उजाले और अँधेरे का असर कैसा ? और जिसको उसका असर हो वह ....।

इस प्रकार यह बात बहुत स्पष्ट हैं कि किसी भी कार्य को करने के लिये उसके योग्य वातावरण अति आवश्यक हैं । उसमें भी जब आत्मा पर लगे हुये अनादिकालीन दुर्गुणों के सामने युद्ध करना हो तब तो वातावरण का मूल्य अनेक गुना बढ़ जाता हैं । अरे ओ माता-पिताओ ! अपने पुत्र रत्न को आप योग्य वातावरण दो । और उस सुयोग्य वातावरण के बीच वह दुर्गुणों को दफना सकता हैं, वैराग्य को उत्पन्न कर सकता हैं, टिका सकता हैं, और बढ़ा सकता हैं । तो फिर अयोग्य वातावरण में भी वैसे ही वैराग्य की अपेक्षा छोड़ दो । और उसे सद्गुरु के चरणों में समर्पित कर दो । क्यों कि –

કોરી પાટીનું મૂલ્ય તો ઘણું છે,
આધાર બધો લહિયા પર છે...

(इतना जाल लेवें : विशिष्ट ज्ञानदशा को प्राप्त साधक के लिये वातावरण की असर से मुक्त रहना भी संभव हैं । परंतु साधना के प्रारंभ काल में वातावरण की असरसे मुक्त रहना प्रायः असंभव ही हैं ।)

प्रश्न-12 आज के जमाने में पढाई की खूब कीमत हैं । और उस में भी यदि English पर प्रभुत्व हो तो प्रभाव कुछ अलग ही पड़ता हैं । इसलिये हम कहते हैं कि 12th के बाद-C.A. करने के बाद दीक्षा लेना ।

उत्तर : किसी ने पढ़ाई की खूब सरस व्याख्या की हैं -

The heart of education is the education of heart.

आज की कही जाने वाली शिक्षण व्यवस्था में Heart education का कोई स्थान नहीं हैं । संवेदना, भावना और नैतिकता से शून्य केवल माहिती प्रधानता आज के शिक्षण में हैं । और ऐसी शिक्षा का विपरीत असर भी आप देख सकते हो ।

- देख लो आप वृद्धाश्रम में अधिकांशत: शिक्षित व्यक्तियों के माँ-बाप ही होंगे ।
- Abortion करवाने वाले अधिकांशत: शिक्षित ही होंगे ।
- Abortion करने वाले सभी शिक्षित ही हैं ।
- Corruption & Black-Money के चक्कर में अधिकांशत: शिक्षित ही फँसे हैं ।
- धर्म और संस्कृति के सामने विचित्र कुतर्क उठाने वाले अधिकांशत: शिक्षित ही होंगे ।
- सामाजिक मर्यादाओं का 'बंधन' के नाम पर खुलेआम भंग करने वाले अधिकांशत: शिक्षित ही होंगे ।
- शिक्षितो अधिकांशत: अपने मगज में किसी न किसी प्रकार की राई भर करके घूमते रहते हैं जिससे ये अपने को अति उच्च और दूसरे को एकदम तुच्छ देखते हैं । उनके वाणी वर्तन में यह अहं साफ झलकता हैं । शिक्षण की इन सभी विपरीत असरों को देख कर शिक्षण की कीमत कितनी हैं उसका अंदाज लगाया जा सकता हैं ।

और आजीविका की दृष्टि से भी आज शिक्षण निश्चितता नहीं दे सकता । आज भी भारत भर में लाखो शिक्षित बेकार हैं । जैसे जैसे शिक्षण का दर बढ़ा हैं वैसे वैसे शिक्षित बेकारों की संख्या भी दिन प्रतिदिन बढ़ रही हैं ।

रही बात English पर प्रभुत्व प्राप्त करने की तो इस बात में भी बहुत दम नहीं हैं ।

English पर प्रभुत्व प्राप्त करने के लिये माँ-बाप बालकको English Medium में पढ़ने के लिये भेजते हैं जिसके कारण बालक अपनी मातृभाषा में तो कच्चा रहता ही हैं । साथ साथ English Medium में पढ़ने के बाद भी अधिकांशत: Students Englishमें Medium ही रहते हैं ।

बेचारा बालक मातृभाषा में भी Medium और English में भी Medium.

इसके ठीक विपरीत, जिन बालकों ने छोटी अवस्था में ही विद्यालयीय विशेष शिक्षण लिये बिना ही संयम का मार्ग स्वीकार किया हैं वे आराधक के साथ-साथ खूब-खूब प्रभावक भी बने हैं ।

श्री गुरुतत्त्वविनिश्चय प्रकरण में महामहोपाध्याय श्री यशोविजय म.साहेब कहते हैं कि –

आबालभावओ जे गुरुपामूलाउ लद्धसिक्खदुगा ।
णिच्छयव्यवहारविऊ ते वट्टावंति तित्थठिइं ॥

(गु.त.वि.-१५०)

जो बचपन से ही सद्गुरु के सानिध्य को प्राप्त करके ग्रहणशिक्षा और आसेवनशिक्षा को जीवन में उतार करके निश्चय और व्यवहार मार्ग को जानते हैं वे ही शासन की परंपरा को अखंड रूप आगे बढ़ाते रहते हैं ।

वास्तविकता तो यह हैं कि बालदीक्षितों को पढ़ने का जितना अवसर प्राप्त होता हैं उतना दुनियाँ में किसी भी बच्चे को नहीं मिलता । क्योंकि अभ्यास में अतिवाधक ऐसे T.V. और Mobile का

यहाँ पर संपूर्ण रुप से अभाव हैं । इसलिए बाल मुनि अपने अभ्यास में खूब खूब एकाग्रता प्राप्त कर सकते हैं । और इसीलिए वे गुजराती, हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत के अलावा English, न्याय, व्याकरण, ज्योतिष, इतिहास, राजकारण, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मानसशास्त्र, खगोल, भूगोल और आधुनिक विज्ञान जैसे अनेकानेक विषयों का ज्ञान भी रखते हैं ।

इतिहास और वर्तमान इस बात की गवाही देता हैं । देखो यह रही बाल प्रभावको की छोटी सी List...

	नाम	दीक्षाग्रहण समय उम्र	पद
१.	श्री वज्रस्वामीजी	३.५	आचार्य
२.	श्री पादलिप्तसूरिजी	८	आचार्य
३.	श्री वज्रसेनसूरिजी	९	आचार्य
४.	श्री बप्पभट्टीसूरिजी	७	आचार्य
५.	श्री वादिदेवसूरिजी	९	आचार्य
६.	श्री देवसूरिजी	९	आचार्य
७.	श्री सोमप्रभसूरिजी	११	आचार्य
८.	श्री जयानंदसूरिजी	१२	आचार्य
९.	श्री देवसुंदरसूरिजी	८	आचार्य
१०.	श्री ज्ञानसागरसूरिजी	१२	आचार्य
११.	श्री कलिकालसर्वज्ञ हेमचन्द्रसूरिजी	५	आचार्य
१२.	श्री कुलमंडनसूरिजी	८	आचार्य
१३.	श्री सोमप्रभसूरिजी	११	आचार्य
१४.	श्री मुनिसुंदरसूरिजी	७	आचार्य
१५.	श्री रत्नशेखरसूरिजी	६	आचार्य
१६.	श्री लक्ष्मीसागरसूरिजी	६	आचार्य
१७.	श्री आणंदविमलसूरिजी	५	आचार्य
१८.	श्री विजयदानसूरिजी	९	आचार्य

१९.	श्री विजयहीरसूरिजी	१३	आचार्य
२०.	श्री विजयसेनसूरिजी	९	आचार्य
२१.	श्री विजयदेवसूरिजी	९	आचार्य
२२.	श्री विजयसिंहसूरिजी	१०	आचार्य
२३.	श्री विजयप्रभसूरिजी	९	आचार्य
२४.	श्री महोपाध्याययशोविजयजी	८	महोपाध्याय
२५.	श्री विजयरत्नसूरिजी	६	आचार्य
२६.	श्री ज्ञानविमलसूरिजी	८	आचार्य
२७.	श्री लक्ष्मीसागरसूरिजी	८	आचार्य
२८.	श्री नेमिचन्द्रसूरिजी	९	आचार्य
२९.	श्री क्षमासूरिजी	७	आचार्य
३०.	श्री कनकचन्द्रसूरिजी	११	आचार्य
३१.	श्री भातृचन्द्रसूरिजी	१२	आचार्य
३२.	श्री विवेकचन्द्रसूरिजी	११	आचार्य
३३.	श्री कमलसूरिजी	१२	आचार्य
३४.	श्री विजयचन्द्रसूरिजी	१०	आचार्य
३५.	श्री अजितसागरसूरिजी	१४	आचार्य
३६.	श्री वर्धमानसूरिजी	१३	आचार्य
३७.	श्री विक्रमसूरिजी	१३	आचार्य
३८.	श्री रामसूरिजी	१३	आचार्य
३९.	श्री प्रेमसूरिजी (समीवाळा)	११	आचार्य
४०.	श्री भुवनशेखरसूरिजी	१०	आचार्य
४१.	श्री सूर्योदयसागरसूरिजी	६.५	आचार्य
४२.	श्री धर्मधुरंधरसूरिजी	१४	आचार्य
४३.	श्री नवरत्नसूरिजी	७	आचार्य
४४.	श्री नरेन्द्रसागरसूरिजी	८	आचार्य
४५.	श्री ॐकारसूरिजी	११	आचार्य
४६.	श्री जयानंदसूरिजी	१०	आचार्य

४७.	श्री अरविंदसूरिजी	११	आचार्य
४८.	श्री सूर्योदयसूरिजी	१३	आचार्य
४९.	श्री राजेन्द्रसूरिजी	११	आचार्य
५०.	श्री हेमचन्द्रसूरिजी	१२	आचार्य
५१.	श्री जयघोषसूरिजी	१३	आचार्य
५२.	श्री नयप्रभसूरिजी	१२	आचार्य
५३.	श्री यशोभद्रसूरिजी	११	आचार्य
५४.	श्री कनकशेखरसूरिजी	१४	आचार्य
५५.	श्री नित्योदयसागरसूरिजी	१४	आचार्य
५६.	श्री पूर्णचन्द्रसूरिजी	१०	आचार्य
५७.	श्री पुण्यपालसूरिजी	८	आचार्य
५८.	श्री मुक्तिप्रभसूरिजी	७	आचार्य
५९.	श्री यशोविजयसूरिजी	११	आचार्य
६०.	श्री हेमभूषणसूरिजी	१३	आचार्य
६१.	श्री कल्पजयसूरिजी	८	आचार्य
६२.	श्री सोमसुंदरसूरिजी	१२	आचार्य
६३.	श्री दर्शनरत्नसूरिजी	१४	आचार्य
६४.	श्री अजितरत्नसूरिजी	११	आचार्य
६५.	श्री सोमसुंदरसूरिजी	७	आचार्य
६६.	श्री विजयानंदसूरिजी	९	आचार्य
६७.	श्री अभयसागरजी	६.५	पंन्यास
६८.	श्री कुलबोधिसूरिजी	९	आचार्य
६९.	श्री चन्द्रजितसूरिजी	१०	आचार्य
७०.	श्री हंसरत्नसूरिजी	१३	आचार्य
७१.	श्री हरिकांतसूरिजी	१३	आचार्य
७२.	श्री अभयचन्द्रसूरिजी	१४	आचार्य
७३.	श्री रश्मिरत्नसूरिजी	१४	आचार्य
७४.	श्री हृदयवल्लभसूरिजी	१२	आचार्य

यहाँ तो मात्र कुछ ही बाल प्रभावकों की List दी गयी हैं । जिससे प्रभावक बनने के लिये स्कूली शिक्षण की अतिमहत्ता का जो भ्रम मन में बैठ गया हैं वह दुर हो जाय । बाकी जो लोग भौतिक क्षेत्र में उच्चतम डिग्रियों को प्राप्त करने के लिये जीवन का अतिकीमती समय गवाँ देते हैं वे बाद में दीक्षित होने पर भी प्रायः विशिष्ट प्रभावक नहीं बन सकते । वर्षों की कठिन परिश्रम के द्वारा उन्होंने जिस ज्ञान को प्राप्त किया होता हैं वह ज्ञान संयम जीवन में उन्हें ५% भी उपयोगी नहीं बनता हैं । और जो ज्ञान संयम जीवन का प्राण समान हैं उस सम्यक्ज्ञान को वे बड़ी उमर में पढ़ने की शुरुआत करते हैं ।

एक और बात – डिग्री लेने के बाद दीक्षा देने की बात में भी खूब जोखम हैं । आज के School-College का वातावरण अच्छे अच्छे खानदानी युवाओं को भी कब अपनी चपेट में ले ले उसका कोई भरोसा नहीं । फिर कभी कभी अंत में ऐसा भी हो सकता हैं कि पुत्र को छोटी उम्र में जब दीक्षा लेने का भाव है तब आप उसे पढ़ाने का आग्रह रखते हैं । आपकी आग्रह से वह पढ़ना चालू करेगा । और अंत में पढ़-लिख करके डिग्रीधारी बन करके वह इतना अधिक लायक बन जायगा कि अब स्वयं आपको भी नालायक मानने लगेगा । फिर तो वह बेटा न तो आपका रहेगा और न ही जिनशासन का । और अंत में रोती हुयी आँखों से आपको कहना पड़ेगा कि -

'अब पछताये क्या होत, जब चिडियाँ चुग गई खेत' ।

(जब कि संयम स्वीकार का प्रधान लक्ष्य तो आराधक बनना ही हैं । और आराधक तो किसी भी उम्र में संयम स्वीकार करनेवाले बन सकते हैं । परंतु जब आराधक के साथ साथ प्रभावक का भी विचार किया जाता हैं तब विशेष रुप से बाल दीक्षित ही दृष्टिगोचर होते हैं ।)

– x – x –

प्रश्न 13 इस समय तो मैं बेटे को दीक्षा दिलाना नहीं चाहता हूँ । फिर भी यदि इसके भाग्य में दीक्षा होगी तो मैं इसे रोक भी सकने वाला नहीं हूँ । समय जाने दो उसके भाग्य के हिसाब से होगा ।

उत्तर : कुछ माँ-बाप के मन में स्पष्ट निर्णय होता हैं कि मुझे इसे दीक्षा नहीं दिलानी हैं फिर भी स्पष्ट 'ना' न कहते हुये भाग्य की बात बीचमें लाकर पुत्र को समझा देते हैं ।

पता नहीं क्यों, दुनियाँ के सभी क्षेत्रो में पुरुषार्थ को प्रधान मानने वाले भी धर्म के क्षेत्र में सब कुछ नसीब पर छोड़ देते हैं ।

• पुत्र के नसीब में होगा तो उसका School के Exam में अच्छा Marks आयेगा । ऐसा विचार कर नसीब पर नहीं छोड़ते ।

• बेटी के नसीब में होगा तो सामने से आकर अच्छा वर मिलेगा । ऐसा विचार कर कोई माँ-बाप पुरुषार्थ किये बिना नहीं रहता । वर की खोज तो करते ही हैं ।

• जो अपने नसीब में होगी तो लाखों करोड़ों की कमाई होगी । ऐसा विचार कर एक भी व्यक्ति नोकरी, धंधा आदि पुरुषार्थ को नहीं छोड़ता ।

• नसीब में होगा तो Vehicle चलाना आ जायगा । ऐसा विचार कर कोई ऐसे ही बैठा नहीं रहता ।

• नसीब में होगा तो रोग मिट जायगा । ऐसा विचार कर कोई व्यक्ति दवा लेना बन्द नहीं करता ।

अरे, भिखारी जैसा गँवार और अनपढ़ व्यक्ति भी नसीब में होगा तो पेट भरेगा । ऐसा विचार कर पड़ा नहीं रहता । वह भी भोजन पाने के लिये पुरुषार्थ तो करता ही हैं ।

इस तरह से तमाम भौतिक क्षेत्र में मनुष्य पुरुषार्थ को प्रधान गिनता हैं और उसके अनुरुप आचरण करता हैं । तो फिर दीक्षा के विषय में ऐसा क्यों नहीं ?

उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिर्शक्तिः पराक्रमः ।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र दैवं सहायकृत् ॥

जो उद्यमी हैं,
जो साहसिक हैं,
जो धैर्यवान हैं,
जो बुद्धिमान हैं,
जो शक्तिसंपन्न हैं
और जो पराक्रमी हैं
उसको ही भाग्य फल देता हैं ।

उद्यम आदि कुछ करना नहीं और मात्र भाग्य की ही बात करना यह तो मात्र दंभ हैं । विश्वासघात हैं । ठगहारी हैं । कपट हैं । माया हैं और चीटिंग हैं ।

सच्चे माँ-बाप किसे कहते हैं उसे बताते हुये श्री मुनिसुन्दरसूरिजी 'अध्यात्म कल्पद्रुम' में कहते हैं कि –

माता पिता स्वः सुगुरुश्च तत्त्वात्,
प्रबोध्य यो योजति शुद्धधर्मे,
न तत्समोऽरिः क्षिपते भवाब्धौ,
यो धर्मविघ्नादिकृतेश्च जीवम् ॥ (१२-१०)

सच्चे माता-पिता, सगे-संबन्धी और सद्गुरु वह हैं जो संतान आदि को प्रतिबोध करके शुद्ध धर्म में जोड़ दे । बाकी जो धर्म में अंतराय आदि करे और उस जीव को भवसागर में फेंक दे उसके समान कोई दुसरा दुश्मन भी नहीं हैं ।

Please,
Don't be an enemy for your child.
Be a Parents, A real parents.

प्रश्नांक 14 अच्छे ज्योतिषी ने मुझे बताया कि मेरा बेटा ग्रहों के हिसाब से दीक्षा नहीं ले सकता । बेटे को दीक्षा देने में जोखम हैं ।

उत्तर : जिनशासन सर्वज्ञ का शासन हैं । जिनशासन द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के असर को निश्चित रुप से मानता हैं । इसमें कोई ना नहीं हैं ।

फिर भी,

जिनशासन केवल काल को अर्थात् अकेले ज्योतिष को ही नहीं मानता । चारों को मानता हैं । अर्थात् मात्र ग्रह-नक्षत्र-राशि के आधार पर उसके असर को नहीं मानता । बल्कि अच्छा-बुरा द्रव्य आदि सभी के असर को स्वीकार करता हैं । इसलिये यह संभव हैं कि भले ज्योतिष शास्त्र चाहे जो कहता हो परंतु उसके फलादेश को बदलना वह भी जीव के पुरुषार्थ के आधीन हैं । सत्पुरुषार्थ और धार्मिक अनुष्ठानों के द्वारा अशुभ कर्मो (निकाचित के अलावा) तथा अशुभ ग्रहचारों की असर को दूर किया जा सकता हैं । और इस तरह से चारित्र मोहनीय कर्मो का क्षयोपशम करके चारित्र लिया जा सकता हैं । और अतिसुंदर रीति से पालन भी किया जा सकता हैं । इतिहास इस बात का साक्षी हैं ।

याद करो 'पाणिनी' को – केवल साढ़े तीन साल की आयु में पाणिनी के माता-पिता किसी हस्तरेखा निष्णात को पाणिनी का हाथ बताते हैं । वह कहता हैं कि, आपका बालक पूरी जिंदगी ढबु का 'ढ' ही रहेगा । इसके नसीब में ज्ञान प्राप्ति हैं ही नहीं । देखो, इसकी यह ज्ञान रेखा अत्यन्त छोटी हैं ।

पाणिनी इस बात को सुनता हैं । उसे 'ढ' रहना बिलकुल मंजूर नहीं हैं । यह साढ़े तीन साल का छोटा सा बच्चा रसोईघर में से चाकू लेकर आता हैं और उस ज्ञान रेखा को जिसे वह ज्योतिषी छोटी बता रहा था । उसे चाकू के द्वारा चीर करके लम्बी कर देता हैं । खून की धारा बहती हैं साथ साथ उसके इस तीव्र पुरुषार्थ से ज्ञान नाशक कर्म

भी बह गये ।

इतिहास गवाह हैं कि जो 'ढ' बनने वाला था वही पाणिनी संस्कृत भाषा के संपूर्ण व्याकरण की रचना करने वाला महाविद्वान 'पंडित पाणिनी' बना । उसके तीव्र पुरुषार्थ ने नसीब के-कर्मों के गणित को बदल दिया ।

आज तक हजारों-लाखों लोग पाणिनी द्वारा रचे हुये व्याकरण के आधार पर संस्कृत भाषा को पढ़ने लगे ।

इस तरह से ज्योतिष के आधार पर अपने अमूल्य मानव जीवन को संसार की आग में स्वाहा न कर दिया जाय ।

मानो कि, कोई ज्योतिषी संसार के विषय में आपको ऐसा कुछ कहे तो आप क्या करोगे ?

पुरुषार्थ छोड़ दोगे ? जैसे कि ज्योतिषी कहता हैं कि आपका धंधा नहीं चलेगा । तो क्या धंधा करना बंद कर दोगे ?

• लड़का Exam में Fail ही होगा तो क्या उसे पढ़ाना छोड़ देंगे ?

• बेटी का पति विचित्र ही मिलेगा तो क्या पूरी जिंदगी घर पर ही बैठा कर रखोगे ?

• कोई बड़ी बिमारी २ वर्ष तक नहीं मिटेगी तो क्या दवाइयाँ लेना छोड़ दोगे ?

• लड़के की बहू झगडालू आयेगी और लग्न संबन्ध विच्छेद होगा तो क्या लड़के की पूरी जिंदगी शादी ही नहीं करोगे ?

ज्योतिषियों का ऐसा फलादेश सुनने के बाद भी जो आपका हृदय अंदर से ऐसा ही कह रहा हो कि 'भले ये तो कहे । परन्तु इनके कहने मात्र से हमें सब सच मानने की आवश्यकता नहि है । हमें तो हमारी तरफ से योग्य पुरुषार्थ करना ही हैं ।' तो फिर आप दीक्षा के विषय में भी ऐसा ही विचार करें वही क्या उचित नहीं कहा जा

सकना ? किसलिये इस विषय में ज्योतिषी के वचनो को आधार मानकर पुरुषार्थ छोड़ दें ?

अभी भी एक बात हैं - यह कलिकाल हैं । यहाँ रहने वाले सभी जीव थोड़ा-बहुत अंश में राग-द्वेष और अज्ञान से भरे हुये हैं । ज्योतिषी भी इससे अलग नहीं हैं । साथ साथ जिस ग्रह नक्षत्र के आधार पर फलादेश किया जाता हैं उन ग्रहों आदि को बताने वाले पंचाङ्गो में भी भिन्नता हैं ।

- बहुत से ज्योतिष शास्त्रों का विनाश हो गया हैं ।
- जो मिलते हैं उन सभी में समानता नहीं हैं ।
- और उस ज्योतिष शास्त्र के सांगोपाङ्ग ज्ञाता भी बहुत कम हैं ।
- और उसमें भी फलादेश के विषय में विशिष्ट जानकारी बहुत कम लोगों के पास हैं ।
- एक ही कुंडली चार ज्योतिषियों को बताओ तो चारों का मत भिन्न भिन्न होता हैं ।
- कुछ तो नये नये ज्योतिषी होते हैं 'निशाना लगा तो तीर नहीं तो तुक्का ।'
- कुछ तो पैसा कमाने के लिये ही होते हैं ।

और इन सब की अपेक्षा सबसे महत्त्व की बात यह हैं कि शायद ज्योतिषशास्त्र, ज्योतिषी, उनके द्वारा किया जाने वाला फलादेश सब कुछ इस समय भले ही सच्चा हो फिर भी इस फलादेश में बदलाव पुरुषार्थ के द्वारा संभव हो सकता हैं । इसलिए कभी भी आत्मोत्थान के शुभ कार्य में ऐसे किसी भी निमित्त को लेकर प्रमाद करने जैसा नहीं हैं ।

- अपने ज्योतिषी अर्थात् अपने संविज्ञ ज्ञानी गुरु भगवंत ।
- अपना फलादेश अर्थात् गुरु भगवंत के द्वारा अपने लिये कही हुयी बातें ।
- अपना ज्योतिषशास्त्र अर्थात् अपना खुद का अनुभव, वह क्या कहता हैं उतना ही सोचो । इसके अलावा कहीं पर भी १००% श्रद्धा रखने जैसा नहीं हैं ।

प्रश्न 15 भगवान ने जैसे सर्वविरति धर्म बताया हैं उसी प्रकार से देशविरति धर्म भी बताया हैं । तो फिर सर्वविरति के लिये इतना भार क्यों ?

उत्तर : आपकी बात सही हैं ।

साधुधर्म और श्रावकधर्म दोनों प्रकार के धर्मों को भगवान ने ही बताया हैं । परंतु भगवान ने शिवनगर के पूर्ण मार्ग के रूप में साधुधर्म को ही बताया हैं ।

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ।

(तत्त्वार्थसूत्र)

जो जीव पूर्णतः इस मार्ग पर नहीं चल सकते हैं । वे जीव भी कुछ अंश तक इस मार्ग पर आगे बढ़ सकें उसके लिये दूसरा अपवाद मार्ग अर्थात् देशविरति धर्म बताया हैं ।

पहला मार्ग एरोप्लेन की गति से जल्दी मोक्ष पहुंचाता हैं । और दूसरा मार्ग साइकल की गति से मोक्ष की तरफ आगे बढ़ाता रहता हैं ।

इसके लिये यहाँ पर कुछ शास्त्र पाठ दिये जा रहे हैं -

यः पुरुषो निर्मलज्ञानदर्शनचारित्रैः संयुक्तो भवति
स संसारसमुद्रं तरित्वा स्तोककालेन मोक्षं गच्छति ।

(गौतमपृच्छा)

जो आत्मा शुद्ध रीति से सम्यग्ज्ञान दर्शन और चारित्र की आराधना करता हैं वह आत्मा संसार सागर को तैर करके अल्प समय में ही मोक्ष को प्राप्त कर लेता हैं ।

चारित्ररत्नान्न परं हि रत्नं,
चारित्रवित्तान्न परं हि वित्तम् ।
चारित्रलाभान्न परो हि लाभः,
चारित्रयोगान्न परो हि योगः ॥

(मौन एकादशी माहात्म्य)

संसार में यदि कोई सच्चा रत्न हे तो वह चारित्र हैं ।
संसार में यदि कोई सच्चा धन हैं तो वह चारित्र हैं ।
संसार में यदि कोई सच्चा लाभ गिना गया हैं तो वह चारित्र हैं ।
संसार में यदि कोई सच्चा योग हैं तो वह भी चारित्र ही हैं ।

एगदिवसंपि जीवो पव्वज्जमुवागओ अनन्नमणो ।
जइ वि न पावइ मुक्खं अवस्स वेमाणिओ होइ ॥

(उपदेशमाळा-९०)

एक दिन के लिए भी अतिचारशून्य चारित्र का पालन करनेवाला जीव सिद्ध गति को प्राप्त करता हैं । यदि काल संघयण आदि के प्रभाव से मोक्ष न मिले तो भी वैमानिक देवलोक में स्थान अवश्य प्राप्त करता हैं ।

सम्मत्तदेसविरई पलियस्स असंखभागमेत्ताओ ।
अट्ठभवा उ चरित्ते । (आवश्यक निर्युक्ति - ८५६)

संपूर्ण भवचक्र में एक जीव भाव सम्यक्त्व और भाव देशविरति के अधिक से अधिक असंख्य भव प्राप्त कर सकता हैं । जब कि भाव सर्वविरति के अधिक से अधिक सात से आठ भव ही प्राप्त करता हैं । अर्थात् उसके बाद जीव संसार में नहीं रह सकता । उसका मोक्ष अवश्य ही हो जाता हैं ।

सच्चे साधु जीवन के अधिक से अधिक सात से आठ ही भव और फिर नियमानुसार मोक्ष ।

सव्वमवि तेण कयं, तव-संजमुज्जमंतेणं ।

जो तप और संयम में उद्यमशील हैं उन्होंने सभी धर्मो को कर लिया हैं । सच्चे संयम के पालन में दान-शील-तप और भाव चारों प्रकार के धर्म समाहित हो जाते हैं ।

और इसीलिये ही श्रीधर्मदासगणिवरजी बताते हैं कि -

भवसयसहस्सदुलहे, जाइ-जरा-मरणसागरुत्तारे ।
जिणवयणम्मि गुणागर ! खणमवि मा काहिसि पमायं ॥

(उपदेशमाळा-१४४)

हे गुणभंडार आत्मन् ! लाखों करोड़ों भवों में भी जिसे प्राप्त करना मुश्किल हैं । और जो जन्म-रोग-वृद्धावस्था और मृत्यु के पंजे में से हमेशा के लिये मुक्ति कराने वाला है । ऐसे-सर्वज्ञ वीतरागी भगवान के वचन को प्राप्त करके अब एक क्षण के लिये भी प्रमाद मत करना ।

इस प्रकार अनेको तरह से सर्वविरति धर्म ही सर्वश्रेष्ठ हैं । जब कोई भी व्यक्ति ऐसा कहता हैं कि सभी लोग दीक्षा ग्रहण कर लेंगे तो श्रावक कौन बनेगा ? ऐसा बोलने वाले हकीकत में कुछ समझे ही नहीं । यह तो ऐसा ही प्रश्न हैं कि 'जब सभी लोग अरबों कमायेंगे तो हजार कौन कमायेगा ?' अरे भाई ! जिसकी अरबों कमाने की शक्ति ही नहीं हैं वह भी भूखा न मरे इसलिए अरबो कमाने के ऊँचे लक्ष्य के साथ भी हजारो कमाय ।

इसी प्रकार जिसकी साधुपना का पालन करनेकी शक्ति ही नहीं हैं वह साधुपना के पालन के लक्ष्य के साथ श्रावक धर्म को स्वीकारे और मंदगतिसे भी मोक्ष की ओर आगे बढ़ता रहे इसिलिए ही भगवानने श्रावकधर्म बताया है ।

– x – x –

दूधमें दहींका अंश मिले तो वह स्वयं दहीं बने । साधक में प्रभु के गुणोंका अंश मिले तो वह स्वयं परमात्मा बने । और वह गुणोंके अंशको पाने का श्रेष्ठ रास्ता है संयम ।

प्रश्न-16 साहबजी ! हम लोग संसार में खूब सुखी हैं । जीवन में किसी भी प्रकार की कोई भी तकलीफ नहीं हैं । शरीर स्वस्थ हैं । परिवार अच्छा हैं । हम लोग आर्थिक दृष्टि से भी बहुत सम्पन्न हैं । समाज में भी खूब अच्छी प्रतिष्ठा हैं । जो हम लोग यहाँ पर ही सुखी हैं तो फिर मिले हुए सुख को छोड़ देना और दूसरे सुख की प्राप्ति के लिए साधना के पथ पर जाना यह कैसा विचित्र लगता हैं ?

हां ! संसार में कोई तकलीफ हो और फिर उससे हताश होकर कोई संयम स्वीकार करें तो यह बात मानने जेसी हैं । और यही बात में अपने पुत्र को भी समझा रहा हूँ । फिर भी वह दीक्षा लेने की मांग किया ही करता हैं ।

उत्तर : इसी प्रश्न का सचोट जवाब देते हुए शास्त्रकार भगवंत कहते हैं कि -

'सुखं धर्मात् दुःखं पापात्'

जीव को संसार में जो कुछ भी सुख हैं वह सभी सुख धर्म के प्रभाव से ही हैं । अर्थात् इस भव में अथवा पूर्व भव में आपने जो कुछ भी धर्माराधना की हैं उसके ही द्वारा प्राप्त किये हुए पुण्य के प्रभाव से ही यह सुख आपको प्राप्त हुआ हैं । फिर कोई भले ही इसे नसीब कहे, Luck कहे या भाग्य कहे । अंतमें तो यह सभी समानार्थी ही हैं ।

जहाँ तक पुण्य हैं वहीं तक शारीरिक सुख हैं ।

जहाँ तक पुण्य हैं वहीं तक मानसिक सुख हैं ।

जहाँ तक पुण्य हैं वहीं तक आर्थिक सुख हैं ।
जहाँ तक पुण्य हैं वहीं तक पारिवारिक सुख हैं ।
जहाँ तक पुण्य हैं वहीं तक सामाजिक सुख हैं ।

फिर भी इस पुण्य से मिलने वाले सुख में मोहित होने जैसा नहि हैं । क्योंकि यह पुण्य बिगडी हुई बहु के समान हैं । जब तक सीधी चले तब तक तो कोई चिन्ता नहि, लेकिन अगर बिगडे तो किसी को भी न छोडे । कहा गया हैं कि –

अव्यवस्थितचित्तानां प्रसादोऽपि भयङ्करः ।

जैसे कोई पागल व्यक्ति आपका पैर दबाये और सेवा करे तो भी बहुत खुश होने जैसा नहीं हैं । क्योंकि इस समय वह भले ही पैर दबा रहा हैं लेकिन यदि पागलपन पे उतर गया तो गला भी दबा देगा ।

उसी तरह से पुण्य अभी साथ दे रहा हैं तो सुख हैं लेकिन इसके मोह में पड़ने जैसा नहीं हैं । जब यह पुण्य मुँह फेर लेगा तो खून के आँसू से रोने के दिन आ जायेंगे ।

विश्वास न हो तो पूँछो ऐसे व्यक्ति से जिसका पुण्य समाप्त हो गया हो, कि भाई संसार कैसा हैं ? संसार में सुख कहाँ हैं ?

- Accident में अपंग हो जाने वाले उस व्यक्ति से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- मशीन में हाथ कट गया हो उस Worker से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- बुखार से शरीर तप रहा हो फिर भी उसका इलाज न करा सकने वालें उस गरीब से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- किसी अनाथ छोटे से बच्चे से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- वृद्धाश्रम में कराहते हुए माँ-बाप से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- बिगड़ेल उद्दंड पुत्र के मुँह से गालियों को सुनते हुये और मार खाते हुये माँ-बाप से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?

- कर्ज में डूबे हुये गृहस्थ से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- धंधे में बरबाद होने वाले व्यापारी से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- ४ डिग्री बुखार में भी मजबूरी से मजदूरी करने वाले मजदूर से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- गले तक डुबकी लगा करके म्युनिसिपालिटी की गटर साफ करने वाले भंगी से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- हररोज भूखे पेट सो जाने वाले गरीब बालक से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- गर्भपात के समय अपने माँ-बाप की प्रेरणा से कटते हुए लाखों संतानों से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- बगैर गुनाह के बार-बार कोर्ट के चक्कर लगानेवाले सज्जन से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- School में Teacher के द्वारा मार खानेवाले Students से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- College में रैगिंग के शिकार बने हुए जुनियर से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- पुत्र और पुत्रियों के द्वारा अपमानित और चिंतातुर रहनेवाले मा-बाप से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- टाटा Hospital में तडपते हुए Cancer के मरीज से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- सालों से जिन्दा लाश की तरह कोमा में गये हुए व्यक्ति से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- छोटी सी उम्र में ही विधवा होने वाली औरत से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- ट्रेन की पटरी पर आत्महत्या करनेवाले कमभागी युवान से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- नोकरी-धंधा न मिलने वाले बेकार व्यक्ति से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?

- सास-ससुर, पति-पुत्रों के लिए जिंदगी समर्पित करने पर भी अपयश प्राप्त करने वाली स्त्री से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- बाढमें जिसका पूरा परिवार बह गया हो उस व्यक्ति से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- भूकंपमें जिसके मकान गिर गये हो उन बेघर बने लोगों से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- दुष्काल में बेहाल बने हुए लोगो से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- जिसकी संपूर्ण दुकान आग से जल गयी हो ऐसे व्यापारी से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- बरसात न गिरने से कंगाल बने हुए किसान से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- बोम्ब विस्फोट में मारे गये लोगों से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- पति के हाथ से हररोज मार खाने वाली पत्नी से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- अरबो रुपया होने पर भी रात को सोते समय नींद की गोली खाकर सोने वाले अरबपतियों से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- विश्वासघात के शिकार हुए पार्टनरशिप में धंधा करने वाले व्यक्ति से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- 'अब तो यमराज जल्दी से अपने पास बुला लें तो अच्छा' ऐसी प्रार्थना करने वाले वृद्ध व्यक्ति से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- पतंग उडाते हुए छत पर से नीचे गिरे हुये बच्चे से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- रोकेट के कारण आग से भस्मीभूत झोपड़ी वालों से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?

- नदी में डूबे हुए व्यक्ति से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- रोज घर-घर भीख मांगने वाले भिखारी से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- करोड़पति से रोडपति बने हुये व्यक्ति से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- अनेको ट्रायल देने के बाद भी C.A. न बन पाने वाले Students से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- १४-१४ घंटे Driving करने वाले Driver से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- जिसकी आँखों की ज्योति चली गयी हैं ऐसे अंधे व्यक्ति से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- स्वार्थी परिवार को पहचान जाने वाले व्यक्ति से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- 'व्यवहार' के नाम पर तंगी का सामना करते हुए सज्जन से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- रिमांड पर लिए हुये व्यक्ति से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- सोर्टसर्किट के कारण जिसका घर जल गया हो ऐसे व्यक्ति से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- रसोईघर में गेस सिलिंडर फटने से जिसका पूरा शरीर जल गया हो ऐसे व्यक्ति से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- पैर के नीचे दब जाने वाली चींटी से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- खिड़की के बीच में फंस जाने से दो टुकड़ा होने वाली छिपकली से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- पतंग की डोरी से कटे हुए लाखों पक्षियों से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- धमाके की आवाज से घबरा जाने वाले पक्षियों से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- संपूर्ण जीवन बिना विरोध किये हुये ठंडी-गरमी और बरसात को सहते हुये पेड-पौधों से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?

- Swimming Pull & Water Park में आपके हाथों मृत्यु को प्राप्त होते हुए पानी की एक एक बूंदो से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- लोगो की Carकी चपेट में आने वाले कुत्ते और बिल्लियों से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- A.C. और पंखे में कटते हुए असंख्य वायुकाय के जीवों से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- Walking के लिए निकले हुए लोगों के फौलादी पंजो के नीचे कुचलती हुई घास से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- कतलखाने में क्रूरता से मरने वाले पशुओं से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- माछीमार की जाल में फँसी हुई मछलियों से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- सूप बन जाने वाले चिकन से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- ज्यूस बन जाने वाले फलों से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- प्राणीसंग्रहालय में कैद हुए सिंह, बाघ से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- भूख और प्यास को रोते रोते सहन करने वाले बैलों से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- विदेशियों के भोजन के लिए Export होने वाले Live भेड़ और बकरियों से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- मदारी के हाथ में पकड़ाये हुए सांप से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- एलोपथी के Experiment में जाते हुए चूहे और खरगोश से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- कीड़ो से खदबदती शरीर वाली गाय से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ।
- विरति पाने के लिए तरसते हुए सम्यक्त्वी देवो से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?

- ईर्ष्या की वजह से अंदरसे जलते हुए देवों से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- मृत्यु के बाद अपने ऊपर आने वाले सीमातीत दु:खों को देखने वाले देवों से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- इन्द्र की आज्ञा से हाथी बनने वाले उस हल्के देव से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- खून और मवाद से उभराती हुई वैतरणी नदी में पड़े हुए नारकी जीवों से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- परमाधामी के हाथ से पेरे जाते हुए उस नरक के जीव से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- थर्मोमीटर फट जाय ऐसे बुखार से तपते शरीर वाले नारक से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?
- सीमातीत और कल्पनातीत दु:खों को हजारों-लाखों-करोड़ो-असंख्य सालों तक भुगतने वाले उन नारकी जीवों से पूँछो कि सुख कहाँ हैं ?

सच में,

सारा संसार हैं दु:खी, जगमें सच्चा संत सुखी ॥

अब इस भव में यदि बाँधे हुए पापों का नाश नहीं करते हैं और धर्माराधना के द्वारा नये पुण्य का उपार्जन नहीं करते हैं तो ऊपर बताये हुए स्थानो में कहीं न कहीं पर अपना नम्बर भी निश्चित रुप से लगने ही वाला हैं । यदि उसके लिए अपनी कोई भी तैयारी नहीं हैं तो इस समय भले ही पूर्वकृत पुण्य के उदय से सुख मिल रहा हो तो भी प्रव्रज्या ग्रहण कर लेनी चाहिए । क्योंकि -

दीक्षाया: भवान्तरकृतपापानां प्रायश्चित्तरुपत्वात् ।

संयम यह भूतकालीन पापों के नाश के लिए अणुबोम्ब के समान हैं । दु:ख का कारण पाप हैं, और पापों के नाश के लिए प्रव्रज्या हैं । दु:ख आये और फिर हम रोना शुरु कर दें इसकी

अपेक्षा दुःख आये उससे पहले ही उसके कारण को ही ऊँखाड़ फेंके यह बहुत ही अच्छा हैं । बुद्धिमानी और होशियारी दोनों इसी में हैं ।

किसी ने बहुत ही मार्मिक बात कही हैं ।

"શું મળે મરતાં સુધી આ માનવીને દુઃખ વિના,
જન્મતાં જેને જગે પહેલાં રુદન કરવું પડે."

कुछ समय पहले की बात हैं,

मुंबई-वालकेश्वर-कल्पतरु बिल्डिग की १४हवी मंजिल से अरबपति शेठ की पुत्रवधु 'भारती' ने कूद कर आत्महत्या की । आप बताइये कि इस अरबपति शेठ की पुत्रवधु के पास क्या नहीं था ? भूल से भी यह विचार मत करना कि रुपया हैं तो सुख हैं । यह बहुत बड़ा भ्रम हैं । इसमें अंत में रोने के अलावा कुछ नहीं बचता ।

રે મન્ ! અવસર ગયો બિતાઈ,
કીકી કાંઈ જોતાં શીખી ત્યાં પાંપણ ગઈ બિડાઈ.

ऐसी दयनीय स्थिति आपकी न हो उसके लिए खूब सावधान रहना । बाकी जो संसार में दुःखी जीवों के लिए ही दीक्षा लेने जैसी हो और सुखी जीवों के लिए नहीं तो प्रथम श्री ऋषभदेव भगवान और दूसरे श्री अजितनाथ भगवान के बीच में '५० लाख करोड़ सागरोपम' का समय था । और उस समय में उत्पन्न हुए सभी राजाओं ने भी दीक्षा ली थी । जिसको योग्य नहीं कहा जा सकेगा । उन असंख्य राजाओं को क्या तकलीफ थी ?

इसके अलावा २४ तीर्थंकरो का जन्म राजकुल में ही हुआ था । फिर भी सभी तीर्थंकरो ने दीक्षा ली ही थी ।

प्रभु शासन में उत्पन्न हुए धन्नाजी, शालिभद्र आदि तथा दूसरे अनेक राजा, महाराजा, शेठ, शाहुकारों ने भी दीक्षा ली हैं । उन सभी लोगों के पास भी अमाप सुख साह्यबी तो थी ही ।

वर्तमान समय में भी खानदान कुल के धनवान परिवार के नवयुवक इस संयम मार्ग पर पदार्पण कर ही रहे हैं ।

इससे तो इस बात का निश्चय हो ही जाता हैं कि संसार में भले ही कितनी सुख साह्यबी हो फिर भी लेने जैसा तो संयम ही हैं । यह सभी इसके ज्वलंत उदाहरण हैं ।

शास्त्रों में तो यहाँ तक कहा गया हैं कि –

सव्वगंथविमुक्को सीईभूओ पसंतचित्तो य ।
जं पावइ मुत्तिसुहं न चक्कवट्टी वि तं लहइ ॥

(परम पवित्र आगमग्रंथ श्री भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक- १३४)

राग-द्वेष की गांठो से मुक्त हुए प्रशांत-उपशांत ऐसे मुनि भगवंत जिस सुख का अनुभव करते हैं वैसा सुख तो ६ खंड के अधिपति ऐसे चक्रवर्ती के पास भी नहीं होता ।

पूरी दुनियाँ जीवनभर बाहर भटकती रहती हैं । होटल, थियेटर, मोल, हिलस्टेशन, गार्डन, वोटरपार्क, फेर, प्लेग्राउन्ड आदि आदि स्थानों पर । फिर भी पूरी दुनियाँ अधिकांशतः दुःखी हैं । यह हकीकत यह साबित करती हैं कि सच्चा सुख बाहर नहीं हैं । अंदर आत्मा में ही हैं । इसीलिए जो जीव आत्मिक सुख का दर्शन भी प्राप्त नहीं कर सका वह जीव बाह्य पदार्थो में ही सुख मान लेता हैं । परिणाम स्वरुप देर सवेर किसी बड़े दुःख की खाँई में जा गिरता हैं ।

श्री उपदेश रहस्य ग्रन्थ में महामहोपाध्याय श्री यशोविजयजी म.साहेब कहते हैं कि -

तिमिरहरा जइ दिट्ठी जणस्स दीवेण णत्थि कायव्वं ।
तह सोक्खं सयमाया विसया किं तत्थ कुव्वंति ॥

श्लोक-७०

जिसकी आँखो में ही तेज होता हैं उसे जैसे दीपक का कोई काम नहीं होता, जैसे कि बिल्ली । उसी तरह से आत्मा के अंदर से ही सुख मिलता रहता हैं तो आत्मा बाह्य पदार्थों में सुख प्राप्त करने के लिए क्यों परेशान हो ।

इसीलिए दुःख की जड़ पाप का ही विनाश करो । सुख की

जड़ पुण्य की तथा गुणों की वृद्धि के लिए संयम स्वीकार जैसा दूसरा इससे अच्छा कोई विकल्प नहीं हैं । जिसको सुख चाहिए लेकिन संयम नहीं चाहिए उस व्यक्ति के लिए ऐसा कहा जा सकता हैं कि अच्छी पैदावार तो चाहिए लेकिन खेत में बीज न बोया जाय, बरसात चाहिए लेकिन बादल नहीं ।

कहा गया हैं कि

बीएण विणा सस्सं इच्छइ सो वासमब्भएण विणा ।

आप खूब समझदार बनो और साथ साथ सच्ची समझ के साथ सन्मार्गगामी बनो । बस यही भावना ।

दीक्षा मतलब ???

- तीन भुवनके शिखरपे पहोंचानेवाला जेट-विमान ।
- संसाररुपी कारावासमेंसे हमेशा के लिये मुक्ति ।
- कर्मोके पहाडों के तोडने के लिए मिसाइल ।
- सद्गुणोको प्रोडक्ट करनेवाली फेक्टरी ।
- अनंत कर्मोकी निर्जरा करानेवाला श्रेष्ठ यंत्र ।
- मोहनीय बंकरको चूर चूर करनेवाला एटम् बॉम्ब ।
- सभी जीवों को अभयदान देनेकी उद्घोषणा ।

प्रश्न 17 इनके चाचा, मौसी आदि सभी लोग यहाँ तक कि अड़ोसी-पड़ोसी भी बच्चे को दीक्षा देने की 'ना' कहते हैं इसी से मन थोड़ा संकोच करता हैं ।

उत्तर : अज्ञानी-कर्मपरवश जीवो गलत सलाह देते हैं उसको मानना बिल्कुल जरूरी नहीं हैं । जो आपके परिवार में से दीक्षा होगी तो आपका कुल तर जायगा । दुनिया तो दो रंगी हैं । आज ऐसा बोलेगी और कल वैसा बोलेगी । उसकी बातों को सुनकर हमें सन्मार्ग का त्याग नहीं करना चाहिये ।

ते धन्ना ते साहू तेसिं पसंसा सुरेहिं किज्जति ।
जेसिं कुटुम्बमज्झे पुत्ताइ लिंति पव्वज्जं ॥

वे धन्यवाद के पात्र हैं, वे पुण्य के भंडार हैं । देवलोक के देव भी उनकी दो मुख से प्रशंसा करते हैं कि जिनके परिवार में पुत्रादि कोई भी व्यक्ति प्रव्रज्या को स्वीकार करता हैं ।

ऐसे स्वर्ण अवसर को मात्र लोक वचन से चूका न जाय । पुत्र आपका हैं । जन्म आपने दिया हैं । लालन पालन करके बड़ा आपने किया हैं । उसमें सुसंस्कारो का सिंचन आपने किया हैं । इसके लिये आपने बहुत मेहनत किया हैं । उस पुत्र पर आपका संपूर्ण अधिकार हैं । दूसरे व्यक्तियों का उस पर कौन सा अधिकार ? उसके जीवन के विषय में, उसके भविष्य के विषय में, उसके वर्तमान संबन्धी और परलोक संबन्धी हित के लिये आपकी जवाबदारी हैं । उस जवाबदारी के पालन में यदि कोई बाधक बनता हैं तो उस व्यक्ति की उपेक्षा की जाती हैं, जवाबदारी को नहीं छोड़ दिया जाता ।

मुझे संयम के मार्ग में बाधा डालने वाले चाचा, मौसी आदि से कहना हैं कि - क्यों अकारण आप लोग अंतराय कर्म

बाँधते हो ? प्रभु नेमिनाथजी के जीवन चरित्र में एक बात आती हैं कि - नेमिकुमार विवाह के लिये जाती हुयी बारात को वापस लौटा देते हैं और इधर नेमिकुमार के माता-पिता रोना-धोना शुरु कर देते हैं । दीक्षा की अनुमति नहीं देते हैं । उस समय लोकांतिक देवो आकर समुद्रविजय और शिवादेवी आदि को समझाते हैं कि –

स्वामी वार्षिकदानानन्तरं त्रिभुवनमानन्दयिष्यतीति समुद्रविजयादीन् प्रोत्साह्यन्ति स्म ।

(श्री कल्पसूत्र-सप्तम क्षण)

हे समुद्रविजय राजा ! आपका पुत्र त्रिभुवन का स्वामी हैं -

- वह शासन की स्थापना करके भव्यजीवों का तारक बनेगा ।
- भव्यजीवों को अनंतदु:खो से मुक्त करने के लिये प्रभु शासन की स्थापना कर सकें इसलिये आप उन्हें सहर्ष अनुमति प्रदान करें ।
- अनुमति प्रदान करने के द्वारा आप भी पुण्यानुबंधीपुण्य का उपार्जन करेंगे ।
- जगत के जीव आपके उपकार को भी याद करेंगे ।
- त्रिभुवन को आनंद देने वाले नेमिनाथ भगवान को देख करके आप भी अति-अति-अति आनंदित होंगे ।
- आप इस सुकृत की अनुमोदना कर करके भी निकट मुक्तिगामी बनोगे ।
- आपकी आत्मा का भी सच्चे अर्थ में कल्याण होगा ।
- आपका सुपुत्र यदि इतना सत्त्वशाली हैं तो आपको भी सत्त्वशाली बनना ही पडेगा ।
- आप सहर्ष अनुमति प्रदान करें और प्रभु के सांवत्सरिक दान का शुभारंभ करायें ।

और इस तरह अनेकों प्रकार से लोकांतिक देवो माता-पिता आदि को प्रभु को संयम स्वीकार में अनुमति देनें के लिये समझाते हैं और अंत में सभी लोग सहर्ष अनुमति प्रदान करते हैं ।

इस बात पर से मुझे इतना ही कहना हैं कि -

● क्या आप भी नव लोकांतिक देवों का अनुकरण नहीं कर सकते ?

● क्या आप दीक्षार्थी के माता-पिता को Positive समझा नहीं सकते ?

● क्या उनकी सत्त्ववृद्धि के लिये, मोह विनाश के लिये उत्साहपूर्ण वचन नहीं बोल सकते ?

● क्या आप एक आत्मा की मुक्ति यात्रा में थोडा-बहुत सहायक नहीं बन सकतें ?

याद रखें -

सतां पथा प्रवृत्तस्य तेजोवृद्धि रवेरिव ।
यदृच्छया प्रवृत्तस्य रुपनाशोऽस्ति वायुवत् ।

(अष्टक प्रकरण-१७)

सत्पुरुषों के मार्ग पर चलने वाले हंमेशा उच्च स्थान को प्राप्त करते हैं । और अपनी स्वच्छंदी विचारधारा का अनुसरण करने वाले संसार में कहाँ खो जाते हैं इसका कोई पता नहीं चलता, और उनकी सिर्फ अति बेहाल दशा ही होती हैं ।

आप भी यदि संभव हो तो भगवान के मार्ग पर चलो । यदि संभव न हो तो लोकांतिक देव जिस मार्ग पर चले हैं उस मार्ग पर चलो । इसके अलावा कोई तीसरा रास्ता ही नहीं हैं । बाकी सभी उन्मार्ग हैं । जो उन्मार्ग आपको कहां पहुँचा देंगा उसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकेंगे । आप अपने सुख-कल्याण और हित के लिये ऐसे उन्मार्गो से बच कर रहें यही आपसे अपेक्षा और शुभ भावना हैं ।

जिसके पास 'क्या है ?' यह भी प्रश्न है । और
जिसके पास 'क्या नही है ?' यह भी प्रश्न है ।
ऐसी अद्‌भुत अजायबी का नाम है - श्रमण

प्रश्न 18 दीक्षा के बाद यदि कभी पुत्र म.साहेब को कोई बड़ी बीमारी हो जाय तो उस समय क्या उसकी देख-रेख हो जायगी या नहि ? इस प्रकार की चिन्ता रहा करती हैं ।

उत्तर : अपने पुत्र के प्रति स्नेह ही आपको यह विचार कराता हैं । भले कोई बात नहीं । इस विषय में भी आप निश्चिंत रहिये । परमात्मा का शासन जयवंत हैं । परमात्मा अपनी शरण में आये हुए को कोई तकलीफ न पड़े इसके लिये सभी प्रकार की व्यवस्था करके गये हैं ।

इसलिये ही शास्त्रों में जगह जगह पर बाल-वृद्ध-ग्लान और तपस्वी की सेवा करने के विषय में विधान देखने को मिलते हैं । इसकी उपेक्षा करने वाले साधु को प्रायश्चित्त भी बताया हैं । इसमें भी ग्लान-बीमार साधु की सेवा के विषय में तो परमात्मा ने यहाँ तक कहा हैं कि –

जो गिलाणं पडिसेवइ, सो मां पडिसेवइ ।

जो ग्लान साधु की सेवा करते हैं वे मेरी (परमात्मा की) ही सेवा करते हैं ।

अब जब ग्लान साधु की सेवा करने वाले को साक्षात् तीर्थंकर की सेवा करने जैसा लाभ मिलता हो तो इस शास्त्रीय हकीकत को जानने वाला कौन ऐसा सुसाधु होगा जो ग्लान साधु की सेवा करने की उपेक्षा करे ?

सद्गुरु भगवंतो के द्वारा भी वाचना आदि में साधुओं को वैयावच्च के कार्य में दिल लगा कर प्रवृत्त होने की प्रेरणाएँ होती रहती हैं ।

इसके साथ-साथ श्री संघ भी महात्मा को ग्लान अवस्था में जरा भी तकलीफ न पड़े उसके लिये खास सावधानी रखता हैं । गोचरी, पानी, दवा, अनुपान से लेकर बड़े-बड़े ओपरेशन तक की

जवाबदारी स्वीकारने के लिये श्री संघ हंमेशा तत्पर रहता हैं। श्रावक श्राविकायें बार-बार उपाश्रय में महात्मा से विनंती करते रहते हैं कि 'कुछ भी खप हो तो पहले मुझे लाभ देना। मेरा घर नजदीक में ही हैं। मैं दीक्षा तो नहीं ले सका हुं, यदि चारित्रधर की सेवा का लाभ मिलेगा तो मेरे अंतराय टूट जाँयगे।'

अतः 'दीक्षा के बाद पुत्र महाराज की देखरेख नहीं होगी तो ???' इन सभी चिंताओं से एकदम से मुक्त हो जाओ। क्यों कि ये सभी चिंताये अयोग्य हैं।

दौड़ते थे तब लगता था कि
मेरे जैसा समर्थ कोई नहीं है।
थोड़ी फुर्सत मिली तब लगा कि
इतना दौड़े उसका अर्थ कोई नही है।

हे प्रभु ! इस संयमयात्रा के द्वारा
आपके और मेरे बीच का अंतर
सतत कम होता रहे।
यही मेरी अभिलाषा है।

प्रश्न : 19 साहेबजी ! आपकी बात और लड़के की भावना दोनो योग्य ही हैं । फिर भी हमारा 'पुत्रस्नेह छुटता ही नहीं हैं । उसके वियोग की कल्पना भी कंपा देती हैं ।

उत्तर : जो आपको अपने पुत्र के प्रति सच्चा स्नेह हैं,

जो आप अपने पुत्र के कल्याण की इच्छा रखते हो,

जो आप अपने पुत्र को इस भव में और आने वाले भव में भी सुखी देखने की इच्छा रखते हो तो आप को अपने सुपुत्र को संयम स्वीकार के लिये सहर्ष संमति देना ही हैं ।

सच्चा स्नेही कौन ???

मनसा वचसा सम्यक्क्रियया च कृतोद्यमः ।

प्रोत्साहयति यस्तस्य स बन्धुः स्नेहनिर्भरः ॥

जो व्यक्ति विचार के द्वारा, वाणी के द्वारा और व्यवहार के द्वारा अन्य को सन्मार्ग पर आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहित करता हैं उसके लिये अपने द्वारा होने वाले सभी प्रयत्नों को करता ही हैं वही सच्चा स्नेही हैं ।

और ठीक इसके विपरीत -

अलीकस्नेहमोहेन यस्तु तं वारयेज्जनः ।

स तस्याहितकारित्वात् परमार्थेन वैरिकः ॥

जो लोग धर्म मार्ग पर जाने की इच्छा वाले संतान को अंतराय करें । रो रो कर उसके वैराग्य को हचमचा दें । अनादिकाल से आत्मामें पडे हुए मोह की उदीरिणा करें और संतान के अंदर उत्पन्न हुयी संयम प्राप्त करने की शक्यता को समाप्त कर दें वे सभी लोग बाहर से भले ही स्नेही-स्वजन दिखायी देते हों हकीकत में वे दुश्मन ही हैं, सबसे बड़े दुश्मन ।

सम्मीलने नयनयोर्न हि किञ्चिदस्ति ।

जब तक आँख बन्द नहीं हुई तब तक यह मोह माया हैं । तो

क्यों इसमें मोहाया जाय ? क्यों इसमें फसाया जाय ? क्यों आपकी शरण में आये हुये एक पवित्र आत्मा की मोक्ष यात्रा को अवरुद्ध कर देते हो ?

भगवान महावीर के द्वारा बताया गया श्रमणवेश जब आपके सुपुत्र के शरीर पर शोभा देगा तब देवता और इन्द्रगण भी उन्हें भावपूर्वक नमस्कार करेंगे । किसलिए मात्र अपने मोह के लिये इन्हें विश्वपूज्य बनने से रोकते हो ?

जिस प्रकार आपको एक माता के स्वरुप में पुत्र के प्रति ममता हैं उसी प्रकार आपको जिनशासन की श्राविका के स्वरुप में कर्तव्य का भान भी होना ही चाहिये ।

जैसे आपको एक पिता के रुप में अपने पुत्र के प्रति प्यार हैं । उसी प्रकार जिनशासन के श्रावक के रुप में अपने कर्तव्य का ख्याल भी होना चाहिये ।

कर्तव्य पालन के विषय में जब मोह ममता विघ्न रुप बनती हो तो उसे सत्त्वशाली बनकर दूर फेंक देना चाहिये ।

अरबोपति पुत्र भी आपको जो पद नहीं दे सकते उस 'रत्न कुक्षि' पद दिलाने की कामना करने वाले आपके लड़के की भावना को क्यों कुचल देते हो ।

संतान को संयम मार्ग पर प्रस्थान करने की सहर्ष अनुमति देकर आप जीवन में ऐसा सर्वोत्कृष्ट सुकृत कर लोगे जिसकी अनुमोदना करने मात्र से ही आपके चारित्र मोहनीय आदि कर्म का नाश होता रहेगा । और आप को भी इस भव में अथवा आने वाले भव में चारित्र की प्राप्ति होगी । जिसके प्रभाव से आप भी परम पद के भोक्ता बनोगे । आपका और आपकी संतान का दोनों का हित आपकी सहर्ष अनुमति में ही समाया हुआ हैं ।

आप इस अवसर को सहर्ष स्वीकार करें उसके लिये खूब खूब शुभाशिष ।

प्रश्नबिंदु 20 पुत्र की भावना और वैराग्य प्रबल हैं । हमारा भी 'दीक्षा नहि ही देनी' ऐसा कोई पागलपन नहीं हैं । परंतु चिंता एक ही हैं कि दीक्षा के खर्च का क्या ? बड़ा महोत्सव करने की हमारी स्थिति नहीं हैं ।

उत्तर : आपका यह प्रश्न १००% सच हैं ।

मैं आपकी इस बात से पूर्णरुप से सहमत हूँ ।

अरे ! केवल आपको ही नहीं बल्कि मध्यमवर्गी अनेक दीक्षार्थी के माँ-बाप को यह चिंता होती हैं । दीक्षा का नाम पड़ते ही उनके माथे पर भार लगने लगता हैं । वास्तविकता यह हैं कि - दीक्षा के पहले वरघोड़ा निकालना ही पड़े । महोत्सव कराना ही पड़े । स्वामीवात्सल्य करना ही पडे । ऐसी कोई भी शास्त्रीय विधि नहीं हैं ।

श्री पंचसूत्र में दीक्षाविधि में स्पष्ट कहा गया हैं कि –

तोसिऊण विहवोचियं किविणाइं ।

रंक-गरीब आदि को अपने वैभव के अनुसार संतुष्ट करके दीक्षा लें ।

दान यह दीक्षाविधि का एक भाग हैं यह बात सही हैं परंतु वैभवोचित । एक करोड़पति दीक्षा लेते समय जितना दान दे उतना ही दान मध्यमवर्गीय दे उसे वैभवोचित नहीं कहा जा सकता ।

प्रभु को पाँच पुष्प चढ़ा करके, गुरु भगवंत को पाँच मुँहपत्ती वोहरा करके, श्री संघ के पाँच आराधकों को खिला करके, पाँच गरीब को एक-एक रुपया दे करके भी दीक्षा ली जा सकती हैं । जो स्थिति उसके अनुरूप ही हो तो इतना ही सुकृत उस व्यक्ति के अनुरूप कहा जाता हैं । उसके लिए योग्य महोत्सव यही हैं । बाकी महोत्सव 'किया जाय' यह अलग वस्तु हैं और 'करना पडे' यह अलग वस्तु है । 'किया जाय' यह शास्त्रीय विधि हैं परंतु 'करना पड़े' यह अविधि हैं । अतः किसी सत्त्वशाली परिवार को

इस अविधि को तोड़ना चाहिये । जिससे पीछे के अनेक मध्यमवर्गीय परिवारों को भी यह व्यवस्था आलंबन स्वरुप बने । जिससे वे लोग व्यर्थ की चिन्ता से और खर्च के भार से मुक्त हो सके । एक उदाहरण बनाया जाय कि विधि तो यही हैं । आपकी पहुँच हो उतना करो । चिंता में पड़ने की कोई जरुरत नहीं हैं ।

विपरीत जनमानस के पीछे का कारण सम्यक्ज्ञान का अभाव हैं । लोगों को सही विधि का ज्ञान हो उसके लिये भी संभव हो तो सत्त्वशाली बनकर शास्त्र विधि को अपनाना चाहिये ।

परंतु -

यदि आपका सत्त्व न पहुँचे और साथ साथ जन मानस भी न बदलाय तो अपवाद मार्ग के द्वारा आप संयम प्रेमी श्रेष्ठियों की सहायता के द्वारा महोत्सव के खर्च को पहुंच सकते हो । परंतु केवल खर्च के कारण अपने बालक के प्रति अंतराय न करें ।

युगप्रधान आचार्यसम प.पू.पं.प्रवर श्री चन्द्रशेखरविजयजी म.साहेब प्रेरित 'विरतिदूत' मासिक में 'अमने लाभ आपशोजी' इस नाम के साथ दीक्षा खर्च का लाभ लेने की इच्छा वाले संयमप्रेमी दानवीर श्रेष्ठियों का विनंती पत्र आता हैं । आप उनका संपर्क भी कर सकते हैं ।

फिर याद रहे कि यह एक आपवादिक खड़ी की गई व्यवस्था हैं ।

मूल मार्ग तो नहीं ही हैं । सत्त्वशाली बनकर मूल मार्ग को पकड़े रखने के लिये ही पुरुषार्थ करना योग्य हैं ।

जिनाज्ञा विरुद्ध कुछ भी लिखा हो तो
त्रिविधे - त्रिविधे मिच्छामि दुक्कडम् ।

Special Thanks to

बालदीक्षानो जय	– आ. उदयवल्लभसूरिजी
संयम कबही मिले	– प्रियम्
दीक्षा पहेलां	– प्रियम्

संयम के लिए तरसते मुमुक्षुओंका अंतर्नाद...

ओ भगवान ! इलेक्ट्रीसीटी के प्रयोग में मुझे प्रत्येक क्षण कटी हुई मछलीओंका खून मिला हुआ लाल रंग का पानी दिखाई पडता है । इलेक्ट्रीसीटीके प्रयोगसे मुझे प्रत्येक क्षण न्युक्लियर रेडिएशन के भोग बने हुए केन्सरसे पीडित मरते हुए स्टाफके व्यक्तिओं और अड़ोश-पड़ोश के रहनेवाले दिखाई पडते हैं।

मुझे पेट्रोलकी प्रत्येक बुंदमें एक्सपोर्ट किये जानेवाले पशुओंका खुन दिखाई पडता है। मुझे मेरे एरकंडीशनमें प्रदुषण से मरते हुए जीवों की कबर दिखाई पड़ती है। मुझे मेरी बाइक और कारसे कुचला हुआ निर्दोष जीवोंका शरीर दिखाई पड़ता है। मुझे मेरी टी.वी. और इन्टरनेटमें १८ पापस्थानों का पावर हाउस दिखाई पडता है। मुझे मेरे मोबाईलमें लाखो-चकलीओकी लाशें दिखाई पड़ती हैं। मुझे मेरे मनोरंजनमें अरबों अरबों जीवों का जीवनभंजन दिखाई पड़ता हैं । मुझे मेरे सांसारिक जीवनमें अनंतानंत जीवों की मृत्यु दिखाई देती हैं।

ओ भगवान ! ६०००० वर्ष का आयंबिल तप जिसने दीक्षा लेने के लिए किया उस सुंदरी की फिलिंग्स के साथ कहता हुं की मुझे दीक्षा दे दो... ६-६ महिने तक दीक्षाके लिए जो रोते रहे उन वज्रस्वामिके आंसुओंके साथ कहता हुं कि मुझे दीक्षा दे दो... दीक्षा लेने के लिए जिन्होंने जीवनपर्यंत छट्ठ के पारणे आयंबिल का तप किया उस शिवकुमार के इमोशन्स के साथ कहता हुं की मुझे दीक्षा दे दो...

ओ मेरे नाथ ! मुझे इन पापों में से बचाओ... जलदी बचाओ... मेरा हाथ पकडो.... मुझे इस कतलखानाकी नोकरीसे छुडाओ.... मुझे इस संसारमें से बाहर निकालो... बस... अब एक क्षण भी मैं इस संसारमें नहीं रह सकता। Please ! कृपा करके मुजे दीक्षा दे दो... मुजे रत्नत्रयी दो... जल्दी दो...

('संयम संवेदना' पुस्तक में से साभार)